वालिदैन का रुतबा
और
ईसाले सवाब

संकलन
अल्हाज मौलाना सैय्यद मोहम्मद जाबिर बाक़िरी जौरासी

प्रकाशक
''इदारा-ए-इस्लाह'' मस्जिद दीवान नासिर अली,
मुर्तुज़ा हुसैन रोड लखनऊ
Q-k-s-u% 0522&4077872 Q-S-D-l% 0522&4077872
www.islah.in

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नाम किताबः वालिदैन का रूतबा और ईसाले सवाब
संकलनः मौलाना सैय्यद मोहम्मद जाबिर बाक़री जौरासी
पेजः 80
संस्करणः प्रथम (हिन्द) जनवरी २०१८
कम्पोज़िंगः शाहिद रज़ा आज़मी
कवर डिज़ाईनः वज़ीर हसन, चन्दा
मुद्रकः अम्बर ऑफसेट प्रेस, लखनऊ
मूल्यः 25 रू
प्रकाशकः एदारा-ए इस्लाह मस्जिद दीवान नासिर अली
मुर्तज़ा हुसैन रोड, लखनऊ २२६००३

ISBN : 978-93-87479-03- '

IDARA-E-ISLAH (Reg.)
Masjid Diwan Nasir Ali, Murtaza Husain Road
Yahiyahganj, Chowk, Lucknow-226003, UP
INDIA
www.islah.in E-mail: islah_lucknow@yahoo.co.in

फ़ेहरिस्त

बिसमेही तआला

अलहम्दो ले अहलेही वस्सलातो अला अहलेहा

दो दहाईयों पहले वालिदे मरहूम की रेहलत के बाद उनके चालीसवें से पहले बहुत जल्दी में यह किताबचा मैं ने संकलित किया था। जो चालीसवें में तक़्सीम हुआ। आम तौर से सूरों और दुआओं पर मुशतमिल किताबचे तक़्सीम होते हैं। लेकिन उस रविश से हटकर जब यह किताबचा हाथों में आया तो हाथों हाथ लिया गया।

यहाँ तक कि बिल्कुल ख़त्म हो गया मांग जारी रही। लेहाज़ा वह पूरा किताबचा मैंने ''माहनामा इस्लाह'' में शाए कर दिया। बाद में कई बार यह प्रकाशित हुई और चालीसवें की मजलिसों में तक़्सीम हुई। मज़ीद मांग पर इसे हिन्दी में प्रकाशित किया जा रहा है। चहारदह मासूमीन अ0स0 के वसीले से बारगाहे माबूद में दुआ है कि एदारा–ए–इस्लाह की अपनी साबिक़ा रविश बर–क़रार रहे और इस एदारे से मुफ़ीद किताबों का प्रकाशन होता रहे।

सैय्यद मोहम्मद जाबिर जौरासी
मसऊल एदार–ए–इस्लाह लखनऊ

बिसमेही तआला

अर्ज़ेनाशिर

कुर्आन व हदीस में मख़लूक़ के हुकूक में नबी[स0अ0] इमाम[अ0स0] के बाद अगर किसी के हुकूक़ अदा करने की सख़्त ताकीद की गई है तो वह वालिदैन के हुकूक़ हैं। वालिदैन वह हैं जो एक कलमा–ए–आक़ के ज़रिया जन्नत से खींच कर दोज़ख़ तक पहुंचा देने का अख़्तियार रखते हैं। अगर औलाद ने ज़िन्दगी में उन्हें नाराज़ किया तो वह आक़ की जा सकती है और अगर मरने के बाद ईसाले सवाब वग़ैरह में कोताही की तो आक़ हो सकती है। औलाद का वालिदैन के साथ कैसा बर्ताव हो? क़ुर्आने मजीद ने एक दम साफ़ अलफ़ाज़ में वज़ाहत कर दी है। इरशादे बारिये तआला हैः

(तर्जुमा) और आपके परवरदिगार का (दो टोक) फ़ैसला है कि तुम सब इसके सिवा किसी और की इबादत न करना और वालिदैन के साथ अच्छा बर्ताव करना और अगर तुम्हारे सामने उन दोनों में से कोई एक या फिर दोनों ही बूढ़े हो जायें तो ख़बरदार उनसे उफ़ तक न कहना और उन्हें झिड़कना नहीं, और उनसे हमेशा शराफ़तमंदी के साथ गुफ़्तगू करना और उनके लिए ख़ाकसारी के साथ अपने कंधों को झुका देना। (बा–अदब रहना) ओर उनके लिए यह दुआ करते रहना कि परवरदिगारा उन दोनों पर उसी तरह

रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह कि उन्हों ने बचपने में मुझे पाला है। (पारह–15, सूरह 17, इसरा आयात 23–24)

औलाद में लड़का हो या लड़की वालिदैन के सिलसिले में उनकी ज़िम्मेदारियाँ बहुत है। लेकिन लड़की के मुक़ाबिले में लड़के की ज़िम्मेदारियाँ बहुत ज़्यादा हैं, यह सच है कि लड़की अल्लाह की रहमत है वह वालिदैन को बहुत सुकून व आराम फ़राहम करती है। उसकी ज़रा सी कोताही मुआशरे में वालिदैन का सर झुका देती है। अगर वह हस्सास व ग़ैरतमंद हैं तो ता–हयात वह ना–क़ाबिले बयान रूहानी अज़ियत में मुबतेला रहते हैं। लेकिन लड़का वह है जिससे नस्ल चलती है। अगर वह सआदतमंद है तो वालिदैन का नाम रौशन करता है और अगर बेराह रौ है तो वालिदैन का नाम बद–नाम करता है। वालिदैन को लड़के से बहुत उम्मीदें वाबस्ता होती हैं। कभी तो यह उम्मीदें तेज़ी से परवान चढ़ती हैं और कभी उन उम्मीदों और आरज़ूओं का जनाज़ा निकल जाता है। वालिदैन की तमन्ना होती है कि उनकी औलाद लड़का हो या लड़की उनके पुर उम्मीद तवक़्क़ोवात पर पूरा उतरे। वह जिस मुनासिब मैदान में उतरे वहाँ क़ाबिले तारीफ़ कारनामें अन्जाम दे। उनके लिए औलाद से ज़्यादा कोई नहीं होता उनकी ख़्वाहिश होती है कि औलाद उनकी नसीहतों पर कान धरे और उनसे इज़्ज़त व एहतेराम से पेश आये।

मोहक़्क़िक़ अर्दबेली अलैहिर्रहमा का कहना है कि:

(तर्जुमा) अक़्ल व नक़्ल दोनों ही से वालिदैन की नाफ़रमानी हराम है और आयातो रिवायत से वजूबे इताअत

वालिदैन को समझा जा सकता है। फ़ुक़हा का कहना है कि वालिदैन अपने फ़रज़न्द को जंगो जेहाद पर जाने से रोक सकते हैं शर्त यह है कि महाज़ पर जाने का हुक्म इमाम अ0स0 ने न दिया हो या मुसलमानो के शहरों पर काफ़िरों ने हमला न किया हो।

(हाशिया उसूले काफ़ी, जिल्द 2, पेज 349)

अगर आप औलाद हैं तो वालिदैन के सिलसिले में अपनी ज़िम्मेदारियाँ समझिये। उनकी ख़िदमत में कमी न कीजिये। उनके सामने बा–अदब रहिये। उनकी बातों को तवज्जो से सुनिये, उनकी ना–फ़रमानी से बचिये। और उनके जाएज़ तवक़्क़ोआत पर पूरा उतरने की कोशिश कीजिये। आप अगर इल्मो अदब से आरास्ता होंगे, बा–मक़सद ज़िन्दगी गुज़ारेंगे, वक़्त की बर्बादी से बचेंगे, फ़ुज़ूलियात से परहेज़ करेंगे, नेकी और सआदत को अपना तरीक़ा बनायेंगे और एक ज़िम्मेदार इन्सान बनकर तरक़्क़ी की राह पर गामज़न होंगे तो अपने मुल्क व क़ौम और अपने मज़हब का नाम तो ऊँचा करेंगे ही, आपके वालिदैन अगर ज़िन्दा हैं तो फ़ख़्र से उनका सर बुलन्द होगा और अगर ज़िन्दा नहीं हैं तो उनकी रूहें मसरूर होकर आपको दुआयें देंगी, अगर ऐसा हुआ तो समझिये दुनिया जहान की दौलत आपके हाथ आगई।

वलिदैन और क़ुर्आनी आयात

¼r tjek½ (1) और तुम्हारे परवरदिगार ने क़तई हुक्म दे दिया है कि उसके अलावा किसी की भी इबादत न करो और माँ और बाप के साथ नेकी करो और अगर तुम्हारे सामने उन दोनों में से कोई एक या फिर दोनों ही बूढ़े हो जायें तो ख़बरदार उनसे उफ़ तक न कहना और उन्हें झिड़कना नहीं, और उनसे बात बहुत अदब से करना और उन दोनों के लिए ख़ाकसारी के साथ अपने कंधों को झुकाए रखो। और उनके लिए यह दुआ करते रहना कि परवरदिगारः उन दोनों पर उसी तरह रहमत नाज़िल फ़रमा जिस तरह कि उन्हों ने बचपने में मुझे पाला है। (सूरए बनी इस्राईल आयात 24)

(2) हम ने इन्सान को वालिदैन के साथ अच्छा सुलूक करने का हुक्म दिया है और अगर वह तुम पर ज़ोर दें कि ऐसे को मेरा शरीक बनाओ जिसका तुम्हें इल्म तक नही ंतो तुम उन दोनों की (इस मुआमिले में) इताअत न करना। (अन्कबूत आयत 8)

(3) और हम ने इन्सान को जिसकी माँ ने रंज पर रंज झेल कर (अपने शिकम में) उसको उठाया और उसकी दूध बढ़ाई दो साल में की, वसीयत की कि मेरा शुक्रिया अदा करो और अपने वालिदैन का शुक्रिया अदा करो और तुम्हारी बाज़गश्त मेरी ही तरफ़ है। अगर तुम्हारे वालिदैन तुम को मजबूर करें कि तुम ऐसे को मेरा शरीक बनाओ जिसका तुम्हें इल्म तक नहीं उस में उन दोनों की इताअत न करना और

दुनियावी मुआमिलात में उनका अच्छी तरह साथ दो। (लुक़्मान आयत 14—15)

(4) और हमने इन्सान को अपने माँ बाप के साथ एहसान (नेकी) करने की वसीयत की। उसकी माँ ने रंज की हालत में अपने शिकम में रखा और ब—हालते रंज उसको जना और उसके शिकम में रहने और दूध बढ़ाई की मुद्दत 30 महीने हुए। यहाँ तक कि वह पूरी जवानी के हुदूद में दाख़िल हो गया और चालीस बरस के सिन को पहुंचा तो उसने अर्ज़ कीः पालने वाले मुझे तौफ़ीक़ दे कि तूने जो मुझ पर और मेरे वालिदैन पर नेअ्मतें नाज़िल की हैं उनका शुक्रिया अदा करूँ और ऐसे नेक आमाल करूँ जिन से तू राज़ी हो जाये और मेरी औलाद को सालेह क़रार दे यक़ीनन मैं ने तेरी तरफ़ रूजू किया है और यक़ीनन मैं फ़रमाँबरदारों में से हूँ। (अहक़ाफ़ आयत 15)

(5) और जब हम ने बनी इस्राईल से अहद लिया कि तुम अल्लाह के सिवा किसी की इबादत न करो और माँ बाप, रिश्तेदारों, यतीमों, मिसकीनों से नेक सुलूक करो और लोगों से अच्छे अन्दाज़ से गुफ़्तगू करो नमाज़ क़ायम करो, ज़कात निकालते रहो। (अल—बक़रा आयत 83)

(6) तुम पर फ़र्ज़ किया गया है कि जब तुम में से किसी की मौत का वक़्त क़रीब आ जाये और वह माल छोड़ रहा हो तो वालिदैन और क़रीबी रिश्तेदारों के लिए अच्छी वसीयत कर जाये। (अल—बक़रा आयत 180)

(7) (ऐ रसूल स0अ0) फ़रमा दीजिये कि तुम अपनी जाएज़ कमाई में से जो कुछ ख़र्च करो तो वालिदैन, अक़रबा,

यतीमों, मिस्कीनों, और मुसाफ़िरों के लिए (भी ख़र्च करो) (अल—बक़रा आयत 215)

(8) अल्लाह की इबादत करो किसी को उसका शरीक न क़रार दो और वालिदैन के साथ नेकी करो और अक़रूबा, यतीमों, मिसकीनों, क़राबतदारों, अजनबी हमसाया, हमनशीन और मुसाफ़िर के साथ भी। (निसा आयत आयत 36)

(9) कह दो आओ मैं तुम्हें पढ़कर सुनाऊँ कि तुम्हारे परवरदिगार ने तुम पर क्या कुछ हराम किया है। यह कि किसी चीज़ को उसका शरीक क़रार न दो और वालिदैन के साथ नेकी करो। (अनाम आयत 151)

(10) (यहिया अ0स0) माँ बाप के हक़ में नेकी करने वाले थे सख़्ती करने वाले नाफ़रमान न थे।(मरयम आयत14)

(11) (दुआये इब्राहीम अ0स0) ऐ हमारे परवरदिगार हिसाब क़ायम होने वाले दिन को मेरे लिए मेरे वालिदैन के लिए और मोमेनीन के लिए मग़फ़िरत क़रार दे। (इब्राहीम आयत 41)

(12) (सुलैमान अ0स0 ने) कहाः परवरदिगार मुझे तौफ़ीक़ दे कि उस नेअ्मत पर शुक्र करूँ जो तूने मुझे और मेरे वालिदैन को अता की और मैं ऐसा नेक काम अन्जाम दूँ जिससे तू राज़ी हो और अपनी रहमत से मुझे नेकूकार बन्दे में शामिल फ़रमा। (नम्ल आयत 19)

(13) (हज़रत नूह अ0स0) ने दुआ फ़रमाईः परवरदिगार! मुझे और मेरे वालिदैन और जो मोमिन होकर मेरे घर में दाख़िल हो और मोमेनीन व मोमेनात को बख़्श दे।

(नूह आयत 28)

(14) जनाबे ईसा अ0स0 फ़रमाते हैं कि उसने मुझे) माँ से नेकी करने वाला बनाया और जब्बारो शक़ी नहीं बनाया। (मरयम आयत32)

अहादीसे कुदसी

❁ मेरी इज़्ज़त व जलाल की क़सम वालिदैन का आक़ किया हुआ अगर तमाम पैग़म्बरों की जितनी इबादत करे तो वह मक़बूल नहीं।

❁ मैं ख़ुदा–ए–वाहिद हूँ मेरे सिवा कोई ख़ुदा नहीं, जिस फ़रज़न्द से वालिदैन राज़ी हों मैं भी उसी से राज़ी हूँ। और जिसके माँ बाप उससे नाराज़ हों मैं भी उससे नाराज़ हूँ।

❁ जिसने अपने वालिदैन से नेकी की और मेरे साथ उक़ूक़ किया (हुक़ूक़े इलाही अदा करने में कोताही की) तो उसको नेक लिखता हूँ और जिसने मेरे साथ नेकी की और अपने वालिदैन का आक़ किया हुआ हो तो उसको आक़ करता हूँ।

❁ ऐ माँ बाप के आक़ किए हुए जो कुछ तेरा दिल चाहे कर मैं तुझे न बख़्शूँगा।

अहादीसे मासूमीन[अ०स०]

पैगम्बरे इस्लाम[स०अ०] ने फरमाया:

❁ महरो मोहब्बत से माँ बाप के चेहरे पर नज़र करना इबादत है।

❁ माँ बाप की खुशनूदी और उनके ग़ज़ब में खुदा का ग़ज़ब है।

❁ दो चीज़े अल्लाह को दुनिया में अज़ाब पर आमादा करती हैं। 1. अल्लाह से बग़ावत। 2. आक़े वालिदैन।

❁ जो मोमिन किसी मोमिन के जनाज़े पर नमाज़ पढ़ लेता है कि बहिश्त उसके लिए वाजिब हो जाती है सिवाए इस सूरत के कि वह बाद में मुनाफ़िक़ हो जाये या उसके माँ बाप उसको आक़ कर दें।

❁ उक़ूक़े वालिदैन से बचो। (यानी यह नौबत न आने दो कि वालिदैन तुमको आक़ कर दें।) इस लिए कि हज़ार साल की राह से बूए बहिश्त सूंघी जाती है लेकिन जो आक़ किया गया हो, जो क़तये रहम का मुरतकिब हुआ हो, वह बूढ़ा जो ज़िनाकार हो, जो शख़्स तकब्बुर से अपने लिबास को ज़मीन पर खींचे वह जन्नत की खुशबू नहीं सूघेगा।

❁ वालिदैन से नेकी करना तमाम चीज़ों के मुक़ाबिले में रहमते खुदा से ज़्यादा नज़दीक है।

❁ जो शख़्स रात इस आलम में बसर करे कि उसके वालिदैन नाराज़ हों तो जब वह सुबह को उठेगा तो उसके लिए जहन्नम के दरवाज़े खोल दिये जायेंगे।

❁ तमाम मुसलमान ब–रोज़े क़यामत मेरी ज़ियारत

करेंगे सिवाये इन लोगों के। 1. आक़े वालिदैन, 2. शराब ख़ोर 3. जो मेरा नाम सुने और सलवात न भेजे।

❁ जिस शख़्स को यह इल्म हो कि उसके माँ बाप या उनमें से कोई एक उससे नहीं राज़ी है और वह उन्हें राज़ी करने की तदबीर न करे तो वह हरगिज़ न बख़्शा जायेगा।

❁ ब–निसबत नमाज़ व रोज़ा व हज व उमरा व जिहाद के वालिदैन से नेकी करना अफ़ज़ल है।

❁ रूए अली[अ०स०] पर, वालिदैन पर, ब–नज़रे मेहरबानी, कुर्आन पर और काबा पर नज़र करना इबातद है।

❁ जो शख़्स ज़ईफ़ वालिदैन की ख़बरगीरी न करे वह हरगिज़ बहिश्त में न जायेगा।

❁ ख़ुदा की लानत हो उन माँ बाप पर जो अपने बच्चों की सही तरबियत न करें और उसे आक़ किये जाने के बाइस बनें।

❁ जिसने वालिदैन को रंज पहुंचाया आक़ हो गया।

❁ दो आदमी बूए जन्नत नहीं सूंघ सकते। 1. आक़े वालिदैन। 2. बेहया मर्द जिसकी औरत फ़हाशी करे और वह ख़ामोश रहे।

❁ अगर तू नेक है तो बहिश्त पर इक्तेफ़ा कर और अगर आक़ हो तो जहन्नम पर इक्तेफ़ा कर।

❁ तीन गुनाह ऐसे हैं जिनकी दुनिया में ही सज़ा देने में ताजील की जाती है। 1. उकूक़े वालिदैन 2. लोगों पर जुल्म करना, 3. ऐहसान से इन्कार।

❁ तीन बातों की ख़ुदा वन्दे आलम ने किसी भी आलत में इजाज़त नहीं दी है। 1. अमानत वापस न करना चाहे वह नेकी की हो या बद की। 2. अपने वादे की वफ़ा न करना

चाहे वह नेक से किया हो या बद से। 3. वालिदैन से नेकी न करना चाहे वह नेकूकार हों या बदकार।

❁ पाँच चीज़ें गुनाहाने कबीरा में से हैं। 1. शिर्क बिल्लाह, 2. उक़ूक़े वालिदैन। 3. तरके ज़ोहद, 4. ख़ूने ना–हक़, 5. झूठी क़सम।

❁ जो वालिदैन को मारे वह वलदुज़ ज़िना है, जो पड़ोसी को सताये वह मलऊन है जो मेरी इतरत से बुग़ज़ रखे वह घाठा उठाने वाला, मलऊन, मुनाफ़िक़ है।

❁ पड़ोसी की इज़्ज़त करो चाहे वह काफ़िर हो, मेहमान की तवाज़ो करो चाहे वह काफ़िर हो। वालिदैन की इताअत करो चाहे वह काफ़िर हों, साएल को वापस न करो चाहे वह काफ़िर ही क्यों न हो। मैं ने बाबे जन्नत पर लिखा हुआ देखा है कि वह बख़ील, रियाकार, आक़ शुदा और चुग़लख़ोर पर हराम है।

❁ वह नज़र जो मोहब्बत से माँ, बाप पर डाली जाये इबादत में शुमार होती है।

अमीरूल मोमिनीन[अ०स०] ने फरमाया:

❁ जो शख़्स अपने वालिदैन को रंज पहुंचाये पस वह आक़ है।

❁ माल मौत तक, औलाद क़ब्र तक और आमाल हश्र तक के साथी होते हैं।

मासूम ए कौनैन[स०अ०] ने फरमाया:

❁ इताअते वालिदैन अज़ाबे इलाही से महफ़ूज़ रखती है।

इमाम हसन[अ०स०] ने फरमायाः

❁ अल्लाह की ख़ुशनूदी वालिदैन की ख़ुशनूदी के साथ और अल्लाह का ग़ज़ब उनके ग़ज़ब के साथ है।

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ०स०] ने फरमायाः

❁ चार अशख़ास के लिए ख़ुदा वन्दे आलम बहिश्त में घर बनाता है। 1. यतीम की कफ़ालत करने वाला। 2. ज़ईफ़ पर रहम करने वाला। 3. वालिदैन के साथ मेहरबानी करने वाला। 4. अपने मुलाज़िमों पर लुतफ़ करने वाला।

❁ जिस मोमिन के अन्दर चार ख़सलतें मौजूद हों ख़ुदा वन्दे आलम उसको आला इल्लीईन बहिश्त में ग़ुरफ़–ए इज़्ज़ो शरफ़ में जगह देता है। 1. जो किसी यतीम को पनाह दे और उसके अहवाल की तरफ़ उस तरह मुतवज्जा होकि बजाये उसके बाप के हो। 2. जो किसी बदहाल फ़क़ीर पर रहम करे उसकी मदद करे और उसके उमूर की कफ़ालत करे। 3. जो अपने माँ बाप का ख़र्च उठाये उनके साथ नेकी करे और उनको कभी आज़ुर्दा न करे। 4. जो अपने ग़ुलाम की मदद करे, सख़्ती व ग़ुस्सा उस पर न करे। जो काम उस से ले उस में उसकी मदद करे और सख़्त काम उससे न ले।

इमाम जाफर सादिक़[अ०स०] ने फरमायाः

❁ अपने वालिदैन से नेकी करो ताकि तुम्हारी औलाद तुम से नेकी करे।

❁ अफ़ज़ले आमाल नमाज़ वक़्त पर पढ़ना, वालिदैन के साथ नेकी करना और राहे ख़ुदा में जिहाद करना।

❁ अपने वालिदैन के साथ नेकी करो ख़्वाह वह ज़िन्दा

हों या मुर्दा उनकी जानिब से नमाज़ अदा करो, सदक़ा दो, हज करो, रोज़ा रखो ताकि उन आमाल का सवाब उनको पहुंचे उस अमल के सबब ख़ुदा वन्दे आलम उस के लिए बहुत सी नेकियों का इज़ाफ़ा फ़रमाता है।

❁ अदना उक़ूक़े वालिदैन ''उफ़्फ़'' कहना है अगर इससे भी कमतर कोई लफ़्ज़ होता तो ख़ुदा वन्दे आलम उस से भी मना फ़रमाता पस उसके मानी यह हैं कि वालिदैन को अज़ीयत न दो न कम और न ज़्यादा और उनको झिड़कना नहीं।

❁ अदना उक़ूक़े वालिदैन यह भी है कि अपने वालिदैन की जानिब ग़ुस्सा की नज़र से देखे।

❁ जो शख़्स अपने वालिदैन की तरफ़ ग़ुस्से की निगाह से देखे चाहे उसके वालिदैन ने उस पर ज़ुल्म ही किया हो तो ख़ुदा वन्दे आलम उसकी नमाज़ क़ुबूल नहीं फ़रमाता है।

❁ वालिदैन के साथ नेकी करना वाजिब है।

❁ अगर तुम तूलानी उम्र चाहते हो तो वालिदैन को ख़ुश रखो।

❁ वालिदैन से नेकी करना ख़ुदा षिनासी की दलील है एहतेरामे वालिदैन से ज़्याद कोई इबादत ख़ुदा वन्दे आलम को ख़ुश नहीं करती है।

❁ जनाबे मूसा अ0स0 ने मुनाजात की उस वक़्त देखा कि एक शख़्स साय–ए अर्श में है सवाल किया ख़ुदा वन्दा! यह कौन है?हक़ तआला ने फ़रमाया यह वह शख़्स है जो वालिदैन के साथ नेकी करता था।

❁ जो शख़्स चाहता हो कि मौत उसके लिए आसान हो

पस वह शख़्स सिल–ए रहम करे और वालिदैन के साथ नेकी करो जो शख़्स ऐसा करेगा ख़ुदा वन्दे आलम मौत को उस पर आसान फ़रमायेगा। और वह ज़िन्दगी में कभी मुबतिलाये फ़क्र न होगा।

❁ वालिदैन ने जो तुम्हारे साथ सुलूक किया और जो तुम ने उनके साथ नेकी की उन दोनों में बहुत फ़र्क़ है जब वह तुम्हारे साथ नेक बर्ताव करते थे तो तुम्हारी ज़िन्दगी का तसव्वुर रहता था और जब तुम उनकी ख़िदमत करते हो तो मौत का तसव्वुर रहता है।

रिवायात

(1) यूनुस[अ0स0] ने इमाम मूसा काज़िम[अ0स0] से रिवायत की हे कि रसूले ख़ुदा[स0अ0] से एक शख़्स ने सवाल किया कि वालिदैन का फ़रज़न्द पर क्या हक़ है? आप ने फ़रमाया कि बाप का नाम न ले, उसके आगे न चले उसके सामने न बैठे, कोई ऐसा काम न करे जिसके सबब लोग उसके बाप को बुरा कहें।

अल्लामा मज्लिसी ने इस रवायत के ज़ैल में तहरीर फ़रमाया है कि बाप का नाम लेने में तहक़ीर है और ख़िलाफ़े ताज़ीम व तौक़ीर। लिहाज़ा उस का नाम अलक़ाब व आदाब से लेना चाहिए।

(2) इमाम जाफ़र सादिक़[अ0स0] ने फ़रमाया कि एक शख़्स रसूले ख़ुदा[स0अ0] की ख़िदमत में आया और अर्ज़ की कि मैं मैदाने जिहाद में जाना चाहता हूँ। आँहज़रत[स0अ0] ने

फ़रमाया राहे ख़ुदा में जिहाद कर अगर क़त्ल किया गया तो तो ख़ुदा के नज़दीक ज़िन्दा है रिज़्क़ पायेगा। और अगर मर गया तो तेरा अज्र अल्लाह पर है और अगर ज़िन्दा वापस आ गया तो गुनाहों से इस तरह पाक हो चुका होगा जैसा माँ के पेट से आया थां उस ने अर्ज़ की या रसूल अल्लाह मेरे वालिदैन हैं वह मुझसे मानूस हैं वह मेरा जिहाद पर जाना पसन्द नहीं करते हैं। आप ने फ़रमाया वालिदैन के साथ रह। क़सम है उसकी जिसके क़ब्ज़–ए–क़ुदरत में मेरी जान है एक शबो रोज़ वालिदैन से उन्स एक साल के जिहाद से बेहतर है।

(3) हलयतुल मुत्तक़ीन में अल्लामा मज्लिसी तहरीर फ़रमाते हैं कि एक शख़्स ने ख़िदमते रसूल[स0अ0] में हाज़िर होकर अर्ज़ की कि मुझे वसीयत फ़रमाईये। आँहज़रत ने फ़रमाया कि मैं तुझे वसीयत करता हूँ कि ख़ुदा से शिर्क न करना, हर चन्द कि तुझे आग में जलायें इल्लाह यह कि तू कोई ऐसा कलमा कह जाये कि दिल तेरा ईमान पर साबित हो और मैं तुझको वसीयत करता हूँ कि वालिदैन की इताअत कर और उनके साथ नेकी कर ख़्वाह ज़िन्दा हों या मुर्दा।

(4) काफ़ी में एक रिवायत है कि एक शख़्स ने इमाम जाफ़र सादिक़[अ0स0] से सवाल किया कि ख़ुदा वन्दे आलम ने क़ुर्आने मजीद में वालिदैन के साथ एहसान का जो हुक्म दिया है वह क्या है? फ़रमायाः एहसान यह है कि उनसे बहुत अच्छे अन्दाज़ से पेश आओ और उसकी नौबत न आने दो कि वह मजबूर होकर तुम से किसी चीज़ का सवाल करें।

(बल्कि उनके कहने से पहले उनके तमाम ज़रूरियात को पूरा कर दो) खुदा वन्दे आलम इरशाद फ़रमाता है किः ''लन तनालुल बिर्रा हत्ता तुन्फ़ेकू मिम्मा तोहिब्बूना। (तुम उस वक़्त तक नेकी को नहीं पहुंच सकते जब तक कि उस में से ख़र्च न करो जिसे तुम अज़ीज़ रखते हो) अगर माँ बाप तुम्हें अज़ीयत पहुंचायें तो तुम उनको अज़ीयत न पहुंचाओ। अगर माँ बाप तुम को मारें जब भी तुम्हारे लिए रवा नहीं कि उनको आज़ार पहुंचाओ। बल्कि उनके हक़ में दुआ करो और सिवाये महरो मोहब्बत के उन पर निगाह न करो और अपनी आवाज़ को उनकी आवाज़ पर बलन्द न करो और उनसे आगे रास्ता न चलो।

(5) इमाम मोहम्मद बाक़र[अ0स0] से रिवायत है कि मेरे पिदरे बुज़ुर्गवार ने एक शख़्स को देखा कि उसका बेटा उसके हाथ पर तकिया किये चल रहा है। आँहज़रत[स0अ0] जब तक ज़िन्दा रहे उस से बात नहीं की। आँहज़रत[स0अ0] ने फ़रमाया उनके साथ इस तरह नेकी करो जिस तरह मुख़ालिफ़ न होने की सूरत में की जाती है।

(6) एक शख़्स ने इमाम जाफ़र सादिक़[अ0स0] की ख़िदमत में अर्ज़ की कि मैं वालिदैन रख्ता हूँ मगर वह मज़हबे हक़ के मुख़ालिफ़ हैं। हज़रत ने फ़रमाया उनके साथ इस तरह नेकी करो जिस तरह मुख़ालिफ़ न होने की सूरत में की जाती है।

(7) इमाम रज़ा[अ0स0] की ख़िदमत में एक शख़्स ने अर्ज़ की कि क्या में अपने वालिदैन के हक़ में दुआ करूँ जबकि

वह मज़हबे हक़ नहीं रखते हैं। फ़रमाया उनके लिए दुआ करो ओर उनकी जानिब से सदक़ा दो। अगर वह ज़िन्दा हों तो उनके साथ लुतफ़ो करम से पेश आओ। (सूरए बनी इस्राईल की आयत 23–24 की तफ़सीर में है कि वालिदैन अगर मोमिन हों तो मग़फ़िरत की और ग़ैर मोमिन हों तो हिदायत व ईमान की दुआ करो।)

(8) पैग़म्बरे इस्लाम[स0अ0] की ख़िदमत में एक शख़्स हाज़िर हुआ ताकि जिहाद करे हज़रत ने फ़रमाया कि जाओ पहले अपने वालिदैन से इजाज़त हासिल करो। इजाज़त दे तो जिहाद करो वरना हत्तल इम्कान उनके साथ हुस्ने सुलूक करो।

(ऐसी तमाम रवायतों में जिहाद न करने की इजाज़त मख़्सूस तौर से पैग़म्बरे इसलाम[स0अ0] ने दी है लेकिन यह आम हुक्म नहीं है। अगर किसी की अदमे शिरकत दीन के लिए नुक़सानदेह है तो बग़ैर इज़्ने वालिदैन के भी उसकी शिरकत वाजिब है। फ़ुक़हा का मुत्तफ़िक़ फ़ैसला है कि हराम पर अमल करने या वाजिब को तर्क करने का वालिदैन हुक्म दे तो उन उमूर में उनका हुक्म न माना जाये अलबत्ता मुसतहबात में उनके ख़्वाहिशात का एहतेराम किया जयेगा।

(9) किताबुस सलात ख़ाशेईन में आयतुल्लाह दस्तग़ैब शहीद ने रिवायत की है कि एक मर्तबा हज़रत दाऊद[अ0स0] ने बारगाहे माबूद में अपने जन्नत के साथी से मुलाक़ात की ख़्वाहिश ज़ाहिर की क़ुदरत ने एक लकड़हारे की निशानदेही की। वक़्ते मुलाक़ात उससे हज़रत दाऊद[अ0स0]

ने पूछा तुम कौन सा नेक अमल अन्जाम देते हो जो बारगाहे माबूद में मक़बूल है। उसने बताया मैं जंगल में लकड़ियाँ चुनता हूँ उन्हें फ़रोख़्त करने के बाद जो रक़म हाथ आती है उसे तीन हिस्सों में तक़सीम करता हूँ एक ज़ईफ़ा वालिदा की ख़िदमत में नज़्र करता हूँ, उक हिस्सा फ़ुक़रा व मसाकीन पर सर्फ़ करता हूँ और एक हिस्सा अपने अहलो अयाल के आज़ूक़ा पर ख़र्च करता हूँ। हज़रत दाऊद[अ0स0] ने इरशाद फ़रमायाः वाक़ेअन तुम पैग़म्बरों की हमनशीनी के लाएक़ हो।

(10) हज़रत मूसा[अ0स0] ने बारगाहे इलाही में इल्तेजा की कि माबूद मुझे मेरे जन्नत के साथ से मिलवा दे। जिब्रीले अमीन के ज़रिया उन्हें आगाह किया गया कि तुम्हारा जन्नत का साथी फ़लाँ क़स्साब है आप उसके पास पहुंचे वह दुकान में गोश्त फ़रोख़्त कर रहा था फ़ारिग़ हुआ तो उसने बचा हुआ गोशत पोटली में बांधा घर की तरफ़ रवाना हुआ हज़रत मूसा[अ0स0] ने फ़रमाया मैं आज तुम्हारा मेहमान हूँ उसने ब–ख़ुशी क़ुबूल किया। घर पहुंचा अपने हाथों से खाना तैयार किया फिर बाला ख़ाने पर जाकर एक ज़म्बील लाया जिस में एक कमज़ोर औरत थी उस शख़्स ने उसका मुंह धुलाया अपने हाथों से उसे खाना खिलाया जब उसे वापस बाला ख़ाने पर ले जाने लगा तो उस ज़ईफ़ा ने कुछ कहा हज़रत मूसा[अ0स0] ने बाद में क़स्साब से पूछा वह ज़ईफ़ा कौन है और क्या कह रही थी?

मैं ने अर्ज़ की वह मेरी माँ है मैं मुलाज़ेमा रखने की

इस्तेताअत नहीं रखता लेहाज़ा दुकान से फ़ारिग़ हो कर उसकी ख़िदमत अन्जाम देता हूँ और वह रोज़ाना दुआ देती है कि ख़ुदा तुम्हें जन्नत में हज़रत मूसा[अ०स०] का हमनशीन क़रार दे। हज़रत मूसा को वह पहचानता नहीं था आपने उससे फ़रमाया तुझे मुबारक हो ख़ुदा वन्दे आलम ने तेरी माँ की दुआ क़ुबूल फ़रमा ली है।

बाप का इम्तेयाज़

पैग़म्बरे इसलाम[स०अ०] ने फ़रमायाः अपने बाप की मोहब्बत को महफ़ूज़ रखो उसको क़ता न करो ताकि कहीं ऐसा न हो कि ख़ुदा तुम्हारे नूर को बुझा दे। (यानी अपने तौफ़ीक़ात सल्ब कर ले)

इमामे ज़ैनुल आबेदीन[अ०स०] ने फ़रमायाः समझो बाप ही तुम्हारी अस्ल व बुनियाद है। अगर बाप न होता तो तुम न होते अगर तुम ख़ुद पर कभी फ़ख़्र महसूस करो तो यह जाना कि बाप ही अस्ल नेअ्मत का सबब हे इस लिए अल्लाह की उस एनायत पर उसका हम्दो शुक्र करो कोई ताक़त अल्लाह के सिवा नहीं है।

रिवायत

एक शख़्स ने इमाम जाफ़र सादिक़[अ०स०] की ख़िदमत में अर्ज़ किया कि मेरा बाप बहुत बूढ़ा हो गया है और उस पर ज़ोअ्फ़ ग़ालिब है जब उसको रफ़ा हाजत की ज़रूरत होती है तो मैं उसका उठा कर ले जाता हूँ आप ने फ़रमाया हाँ ऐसा ही करो अपने हाथ से उसके मुंह में निवाला दो कि कल यह ख़िदमत तुम्हारे काम आयेगी।

मसला: अगर किसी का बाप अपनी नमाज़ें न अदा करे और बेटा क़ज़ा नमाज़े पढ़ने की कुदरत रखता हो चाहे उसने यह नमाज़ें ब–तौरे नाफ़रमानी तर्क की हों तो उसके बड़े बेटे पर वाजिब है कि मरने के बाद खुद यह क़ज़ा नमाज़ें बढ़े या किसी को उजरत देकर पढ़वाए ऐहतेयाते वाजिब यह है कि माँ के सिलसिले में भी इस हुक्म का लिहाज़ रखे।

माँ की खुसूसियत

पैगम्बरे इसलाम[स०अ०] ने फरमाया: जन्नत माँओं के क़दमों के नीचे है।

इमामे जैनुल आबेदीन[अ०स०] ने फरमाया: आगाह रहो कि उस (माँ) ने तुम्हारा वज़न (शिकम में) उठाया जिस वज़न को कोई और न उठाता। और तुम्हें अपने दिल का फल दिया। (खूने जिगर चुसाया) जो कोई किसी को नहीं देता पूरी तरह आज़ा व जवारेह के साथ तुम्हारी हिफ़ाज़त की। अपनी भूख का ख़्याल नहीं किया तुम्हें खिलाया। अपनी प्यास फ़रामोश करके तुम्हें सैराब किया। खुद नहीं पहना तुम्हें पहनायां खुद धूप में रही तुम्हारे लिये साया मुहैया किया। तुम्हारे लिये रात को नींद छोड़ी तुम्हें सर्द व गर्म से महफूज़ रखा ताकि तुम उसके लिए बाक़ी रहो। यक़ीनन तुम में माँ का शुक्रिया अदा करने की ताक़त नहीं सिवाये अल्लाह की मदद व तौफ़ीक़ के।

माँ की बद दुआ

इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ0स0] से रिवायत है कि बनी इस्राईल में एक आबिद था। जिसका नाम जरीह था वह अपने सौमआ (इबादत ख़ाने) में इबादत किया करता था उसकी माँ ने उसे आवाज़ दी उसने जवाब नहीं दिया ऐसा ही तीन बार हुआ। उसकी माँ ने कहा कि मैं चाहती हूँ ख़ुदा वन्दे आलम तुझ से इस गुनाह का मुवाख़िज़ा फ़रमाये। दूसरे दिन इत्तेफ़ाक़न एक ज़ने ज़ानिया औरत वहाँ आई उसके यहाँ एक बच्चे की विलादत वहीं हुई उस औरत ने उस बच्चे को जरीह से मन्सूब किया लोग कहते थे जो शख़्स दूसरों को मना करता था वह ख़ुद ही मुरतकिबे गुनाह हुआ बादशाह ने उसे सूली देने का हुक्म दिया यह हुक्म सुनकर माँ रोने लगी। जरीह ने कहा माँ ख़ामोश रहो यह तुम्हारी बद–दुआ का वबाल है लोगों ने जब यह सुना तो जरीह से पूरा माजेरा पूछा और फिर उसकी बेगुनाही का सुबूत माँगा उस आबिद ने कहा बच्चे को लाया जाये। बच्चा लाया गया। जरीह ने उससे पूछा तो किसका फ़रज़न्द है? वह ब–क़ुदरते ख़ुदा गोया हुआ और एक चरवाहे का नाम लिया। जरीह ने निजात पाई और फिर क़सम खाई की जब तक ज़िन्दा रहूँगा माँ की ख़िदमत करता रहूँगा और उससे जुदा न हूँगा।

माँ की नाराज़गी

एमाली शैख़ तूसी अलैहिर्रहमा में रिवायत है कि असहाबे पैग़म्बर[स0अ0] में से एक जवान सख़्त बीमार हुआ नबी करीम[स0अ0] उसकी अयादत को तशरीफ़ ले गए। उस जवान

की ज़िन्दगी के आख़िरी लमहात थे। आप ने उससे फ़रमाया कल्मा ला—इलाहा इल्लल्लाह का इक़रार करो। उसकी ज़बान लुकनत करने लगी। पैग़म्बर स0अ0 ने पूछा आया उसकी माँ मौजूद है? लोगों ने हाँ में जवाब दिया। माँ को ख़िदमते रसूल स0अ0 में लाया गया आपने पूछाः तुम अपने फ़रज़न्द से नाराज़ हो? उसने अर्ज़ की (फ़रज़न्द की ना—लाएक़ी के सबब) 6 साल से मैं ने उससे बात तक नहीं की है। पैग़म्बर ने उससे सिफ़ारिश की कि बेटे की ख़ताओं को माफ़ कर दे औरत ने पैग़म्बर स0अ0 के ख़ातिर उसे माफ़ कर दिया। पैग़म्बर स0अ0 ने नौजवान से फिर फ़रमाया ला—इलाहा इल्लल्लाह कहो अब उसने आसानी से कल्म—ए तौहीद पढ़ा और अक़ायदे हक़्क़ा ज़बान पर जारी किये।

यही रिवायत दूसरे अन्दाज़ से भी मिलती है कि जब तक माँ नाराज़ थी जवान को दो मोहीब शक्लें दोज़ख़ की ख़बर दे रही थी लेकिन जब माँ ने ख़ताओं को माफ़ कर दिया तो वह नूरारी शक्लें नमूदार हुईं जो जवान को बहिश्त की ख़ुश ख़बरी दे रही थीं।

काश माँ ज़िन्दा होती

अल्लामा मज्लिसी अलैहिर्ररहमा ने बिहारूल अन्वार में इस रिवायत को नक़्ल किया है कि एक शख़्स ख़िदमते रसूल स0अ0 में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की कि मैं ने तमाम उम्र गुनाह में बसर की। हर बुरा काम अन्जाम दिया। क्या मेरे लिए तौबा का इम्कान है और ख़ुदा वन्दे आलम मेरी तौबा क़ुबूल फ़रमा लेगा? पैग़म्बर स0अ0 ने पूछा क्या तुम्हारे माँ बाप

ज़िन्दा है।? उसने अर्ज़ की हाँ मेरे बाप ज़िन्दा हैं। आपने फ़रमाया जाओ और उसके साथ नेकी करो। (ताकि गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो) जब वह शख़्स रूख़्सत होकर चला गया तो रसूल[स0अ0] ने फ़रमाया काश उसकी माँ ज़िन्दा होती। (ताकि जल्द उसके गुनाहों का कफ़्फ़ारा हो जाता)

नबी[स0अ0] का इसरार

बिहारूल अन्वार में रिवायत है कि एक शख़्स ख़िदमते रसूल[स0अ0] में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की मुझे ऐसे अमल की तरफ़ रहनुमाई फ़रमाईये जिससे मैं मुकम्मल नेकी हासिल कर सकूँ। आपने फ़रमाया अपनी माँ के साथ हुस्ने सुलूक करो उसने दोबारा पूछा उसके बाद फ़रमाया अपनी माँ के साथ हुस्ने सुलूक करो। तीसरी बार उसने पूछा उसके बाद किस से सुलूक करूँ? फ़रमाया अपनी माँ के साथ हुस्ने सुलूक करो। अब चौथी बार उसने पूछा फिर किस के साथ हुस्ने सुलूक करूँ। फ़रमाया अपने बाप के साथ।

अमले इमाम[अ0स0]

इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ0स0] जब अपनी मादरे गिरामी के साथ दस्तरख़्वान पर बैठते तो तआम की तरफ़ अपनी माँ पर सबक़त नहीं फ़रमाते थे लेकिन जब प्यास लगती थी तो पानी माँ ही से तलब करते थे किसी ने उसका सबब पूछा आपने फ़रमाया मैं सबक़त इस लिए नहीं करता कि उधर मेरा हाथ न बढ़ जाये जिसकी माँ को ख़्वाहिश हो और पानी उनसे इस लिए तलब करता हूँ कि पानी पिलाने का इतना ज़्यादा सवाब है जिससे मैं अपनी माँ को महरूम नहीं रखना

चाहता।

याद रहे कि यह इमाम की माँ थीं वालिदा नहीं इस लिए कि वालिदा जनाबे शहर बानों का इन्तेक़ाल आपकी विलादते बा–सआदत के वक़्त ही हो गया थां सौतेली रिश्तों का भी ख़ानवाद–ए अहलेबैत में किसी क़द्र एहतेराम था।

तालीमे इमाम अ०स०

काफ़ी व बेहार में में ज़करिया बिन इब्राहीम से रिवायत है कि मैं ईसाई था। इस्लाम लाया, हज के लिए गया सफ़रे हज में इमाम जाफ़र सादिक़ अ०स० की ख़िदमत में हाज़िर हुआ और अर्ज़ की मैं ने इसलाम कुबूल कर लिया है लकिन मेरा ख़ानवादा ईसाई मज़हब ही पर है मेरे माँ बाप भी मौजूद हैं और माँ नाबीना है। क्या मेरे लिये जाएज़ है कि मैं अपने घर वालों से राब्ता रखूँ? इमाम अ०स० ने पूछा वह सुवर का गोश्त तो नहीं खाते हैं मैं ने अर्ज़ की नहीं। इमाम अ०स० ने फ़रमाया उनके साथ ज़िन्दगी बसर करने में कोई मुज़ाएक़ा नहीं हैं। फिर आपने फ़रमाया अपनी माँ के साथ नेकी व एहसान करो, और जब उसकी मुद्दते हयात तमाम हो जाये और वह इस दुनिया से रूख़्सत हो तो उसके दफ़्न कफ़न की ज़िम्मेदारी लो। मैं जब सफ़र से आया तो हुक्मे इमाम की रौशनी में अपनी माँ से बहुत लुतफ़ो मेहरबानी से पेश आने लगा उसे मैं अपने हाथ से खाना खिलाता। उसका लिबास दुरूस्त करता उसके सर में कंघी करता और उसकी ख़िदमत में मशग़ूल रहता।

मेरी माँ ने जब यह तबदीली देखी तो पूछा कि जब

तक तुम मेरे मज़हब पर थे तुम्हारा यह सुलूक नहीं था क्या सबब हुआ कि इस्लाम लाने के बाद तुम मुझ से इस लुतफ़ो मेहरबानी से पेश आने लगे? मैं ने कहा पैग़म्बर[स0अ0] के फ़रज़न्दों में से एक ने मुझे यह तालीम दी है कि ऐसा किया करूँ। माँ ने कहा क्या वह भी तुम्हारे पैग़म्बर[स0अ0] हैं? मैं ने कहा नहीं हमारे पैग़म्बर के बाद कोई दूसरा पैग़म्बर मबऊस नहीं हुआ वह हमारे पैग़म्बर के फ़रज़न्द हैं। माँ ने कहा यह तरीक़ा तो पैग़म्बरों के होते हैं। तुम्हारा दीन हमारे दीन से बेहतर है मेरी रहनुमाई करो ताकि मैं भी दीने इस्लाम कुबूल कर लूँ। मैं ने उसे ज़रूरियाते दीने बताये और वह मुसलमान हो गई उसने ज़ोहर व अस्र मग़रिब इशा की नमाज़ पढ़ी आधी रात को उसकी तबीयत ख़राब हुई मैं उसके बिस्तर के किनारे तीमारदारी में मसरूफ़ रहा, उसने कहा मेरे अज़ीज़ फ़रज़न्द ज़रा ऐतेक़ादाते इस्लामी को फिर दोहराओ मैं ने उन्हें दोहराया उसने उनका इक़रार किया और उसी रात को उसने दुनिया से आँखें फेर लीं कुछ मुसलमानों की मदद से इस्लामी रूसूम के मुताबिक़ उसका जनाज़ा उठाया उस पर नमाज़ पढ़ी और अपने हाथों सिपुर्दे ख़ाक किया। इस रिवायत से वाज़ेह है कि इस्लमा तलवार और ज़ोर व ज़बरदस्ती से नहीं फैला बल्कि मोहम्मद व आले मोहम्मद[अ0स0] ने उसे ऊरूज बख़्शा है।

गुनाहों का कफ़्फ़ारा

सफ़ीनतुल बेहार में रिवायत है कि एक शख़्स ख़िदमते पैग़म्बर[स0अ0] में आया और अर्ज़ की कि ख़ुदा ने मुझे एक बेटी दी थी उसकी मैंने परवरिश की यहाँ तक कि वह जवान हो गई मैं ने उसे आरास्ता किया अच्छा लिबास पहनाया और एक कूँवे के किनारे ले जाकर उस कूवें में उसे डाल दियास कूंवे के अन्दर से उसकी जो आख़िरी आवाज़ मैं ने सुनी वह यह थी कि आह मेरे अज़ीज़ बाप। मैं अपने इस गुनाह पर बहुत शर्मिन्दा हूँ क्या अमल अन्जाम दूँ कि जो इस गुनाह का कफ़्फ़ारा हो जाये। पैग़म्बर[स0अ0] ने उससे पूछा तुम्हारी माँ ज़िन्दा है? उसने अर्ज़ की नहीं पूछा ख़ाला ज़िन्दा है उसने इसबात (हाँ) में जवाब दिया फ़रमाया वह मिस्ल माँ के है जाओ उसके साथ नेकी करो ताकि तुम्हारे जुर्म का कुछ जबरान (जुर्म से निजात) हो।

फक़ीह का गिरया

आयतुल्लाह शैख़ मुर्तज़ा अन्सारी अलैहिर्रहमा की मादरे गिरामी ने जब इन्तेक़ाल फ़रमाया तो बहुत रोये। मय्यत के पहलू में ज़ानू टेक कर बैठ गए। और आँसू बहाने लगे एक फ़ाज़िल शागिर्द ने तसल्ली देते हुए अर्ज़ की आप इल्म के उस बुलन्द दर्जे पर फ़ाएज़ हैं आपके लिए मुनासिब नहीं कि एक ज़ईफ़ा ख़ातूर के इन्तेक़ाल पर इस बेक़रारी से गिरया फ़रमायें। शैख़ मुर्तज़ा अन्सारी ने सर उठाया। अभी तुम माँ के मर्तबे से वाक़िफ़ नहीं हो। इस माँ की सालेह तरबियत और बेइन्तेहा जफ़ाकशी ने मुझे इस मर्तबे तक

पहुंचाया है। इस की इब्तेदाई तरबियत ही ने मेरे तरक़्क़ी और इस इल्मी मर्तबे तक पहुंचने में मेरे लिए ज़मीन हमवार की है।

जिहाद से अफ़ज़ल

मेराजुस सआदत में पैग़म्बर इस्लाम[स0अ0] की ख़िदमत में एक जवान ने हाज़िर हो कर अर्ज़ की मैं जवान हूँ राहे ख़ुदा में जेहाद को बेहतर जानता हूँ। मेरी माँ मौजूद है लेकिन वह जेहाद को पसन्द नहीं करती आपने फ़रमाया अपनी माँ की ख़िदमत में वापस जाओ। ब–ख़ुदा एक रात अपनी माँ के नज़दीक तेरा आराम करना राहे ख़ुदा में एक साल के जेहाद से अफ़ज़ल है।

इसी किताब में एक दूसरी रिवायत भी नक़्ल हुई है कि आँहज़रत की ख़िदमत में एक शख़्स ब–ग़रज़े जेहाद हाज़िर हुआ आँहज़रत[स0अ0] ने फ़रमाया जा माँ की ख़िदमत कर ब–तहक़ीक़ कि बहिश्त उसके क़दम के नीचे है।

''हर हाल में ख़्याल''

औलाद के लिए आज़िम है कि वालिदैन की ज़िन्दगी में उनकी ख़िदमत अन्जाम दें और उनकी वफ़ात के बाद असबाबे मग़फ़िरत मुहैया करते रहें।

मोहम्मद इब्ने मुस्लिम ने हज़रत इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ0स0] से रिवायत की है कि आपने फ़रमाया कि बन्दा वालिदैन की ज़िन्दगी में तो उनके साथ नेकी करता है लेकिन जब वह मर जाते हैं तो उनका हक़ अदा नहीं करता

है उनके लिए दुआये मग़फ़िरत नहीं करता है पस ख़ुदा वन्दे आलम उसका आक़ कर देता है। और जो शख़्स ज़िन्दगी में वालिदैन के साथ हुस्ने सुलूक नहीं करता है वालिदैन उसे आक़ कर देते हैं मगर उनकी मौत के बाद उनके हक़ को अदा करता और उनके लिए दुआये मग़फ़िरत करता है तो अल्लाह उसको नेक क़रार देता है।

लिहाज़ा ज़िन्दगी में भी वालिदैन की ख़िदमत करे और उनकी मौत के बाद ऐसे आमाल अन्जाम दे जिससे उनकी रूह पर शिद्दत में तख़फ़ीफ़ और उसे सुकूल हासिल हो और तमाम मोमेनीन पर जब हालते एहतेज़ार तारी हो तो सूरए यासीन और सूरए साफ़्फ़ात की तिलावत करे। दुआ अदीला पढ़े ताकि उस सख़्त वक़्त में ज़रूरी अक़ाएद मरने वाले के पेशे नज़र रहें और मौत के बाद ऐहतेराम व ऐहतेमाम के साथ गुस्लो कफ़न, दफ़न का इन्तेज़ाम करे।

मैय्यत महफ़ूज़ रहेगी

ख़ाके तुरबत या बग़ैर सियाही के अंगुश्ते षहादत से कफ़न पर यह फ़िक़रा लिख दे मय्यत असली हालत पर रहेगी। हशरातुल अर्ज़ और अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहेगी वह फ़िक़रा यह है।

''या करीमल–अफ़वे वल–अदले अन्नतल–लज़ी मलाआ कुल्ला शैइन अदलोहू।''

मशायते जनाज़ा

इमाम जाफ़र सादिक़[अ0स0] से मरवी है कि जो मोमिन जनाज़े के साथ जाता है सत्तर मलक उसके लिए ता—क़यामत हमराह रहकर इस्तेग़फ़ार करते रहते हैं। जो शख़्स एक तरफ़ से जनाज़ा उठाये 25 गुनाह उसके बख़्शे जाते हैं और अगर चारों तरफ़ काँधा दे तो तमाम गुनाह माफ़ा होते हैं।

जब जनाज़ा उठाये तो यह दुआ पढ़े।

बिस्मिल्लाहे व बिल्लाहे अल्लाहुम्मा सल्ले अला मोहम्मद व आले मोहम्मद वग़फ़िर लिलमोमेनीना वल—मोमेनाते। और जनाज़ा देखे तो पढ़ेः अल्लाहो अक्बर व—हाज़ा मा व अदनल लाहो व रसूलोहू, अल्लाहुम्मा ज़िदना ईमानौं व तसलीमन। अलहम्दो लिल्लाहिल—लज़ी तअज़्ज़ज़ा बिल—क़ुदरते व क़हरा एबादुहू बिल—मौते।

मैय्यत को जब क़ब्र के पास रखे तो कहे। अल्लाहुम्मा अब्दोका वबनो अब्देका वब्नो अमतेका नज़ला बेका व अन्नता ख़ैरो मन्जूलिन बेही।

औरत के लिए कहेः अल्लाहुम्मा अमतिका वबनतो अब्देका वबनतो अमतिका नज़ालत बिका व अन्नता ख़ैरो मन्जूलिन बेहा।

रियाकार आबिद

किताबे मआद में आयतुल्लाह दस्तग़ैब शहीद ने इमाम जाफ़र सादिक़[अ0स0] की रिवायत नक़्ल की है कि बनी इस्राईल के एक आबिद के लिए जनाब दाऊद[अ0स0] पर

वही–ए रब्बानी हुई कि यह रियाकार है जब उसका इन्तेक़ाल हुआ तो जनाबे दाऊद[अ0स0] ने उसके जनाज़े पर नमाज़ न पढ़ी लेकिन चालीस दीगर अफ़राद ने उसके जनाज़े पर नमाज़ पढ़ी। जनाबे दाऊद से मिनजानिबिल्लाह सवाल हुआ कि तुम ने नमाज़ क्यों न पढ़ी अर्ज़ की तेरी दी हुई ख़बर की बुनियाद पर मैं ने नमाज़ नहीं पढ़ी। इरशाद हुआ चूँकि एक जमाअत ने उसकी अच्छाई की गवाही दी इस लिए मैं ने उस बख़्श दिया।

पहली रात

दफ़्न के बाद पहली रात मरने वाले के लिए बहुत सख़्त होती है उस रात नमाज़ों, तिलावते क़ुर्आने मजीद और सदक़ात के ज़रिये मरने वाले की रूह को सुकून पहुंचाना चाहिए और बाद में भी यह सिलसिला जारी रखे मुर्दे के लिए सदक़ा दे लेकिन बेहतर यह है कि उसकी तरफ़ से सदक़ा देता रहे और उसकी तरफ़ से ज़ियारते पढ़े और रोज़े रखे और सुन्नती नमाज़ें पढ़े। अगर मरने वाले के ज़िम्मे वाजिबात हैं मसलन नमाज़ें, रोज़े, हज, ज़कात, ख़ुम्स वग़ैरह तो उनको भी अदा करना चाहिए बल्कि उन्हें तरजीह दे। नेअ्मात ज़ाये करने और बद–अख़लाक़ी करने से फ़िशारे क़ब्र का ख़तरा रहता है इस लिए दफ़्न के साथ ही मरने वाले के लिए आमाले ख़ैर ज़रूरी हैं।

नमाज़े वहशते क़ब्र

इस नमाज़ को नमाज़े हदय–ए–मैय्यत भी कहते हैं। मैय्यत दफ़्न करने के बाद पहली रात को उसके लिये दो

रकअत नमाज़ वहशत पढ़ना मुस्तहेब है यह नमाज़ क़ब्र की पहली रात में किसी वक़्त भी पढ़ सकते हैं लेकिन मुनसिब यह है कि पहली रात के इब्तेदाई हिस्से में यह नमाज़ पढ़ी जाये और बेहतर यह है कि नमाज़े मग़रिब व इशा के दरमियान पढ़े। नमाज़े वहशत पढ़ने का तरीक़ा यह है।

नियत करे नमाज़े हदय—ए मैय्यत पढ़ता हूँ दो रकात सुन्नत कुरबतन इलल्लाह। और तकबीरतुल एहराम कहे। पहली रकअत में सूरए अल—हम्द के बाद एक मर्तबा आयतल कुर्सी और दूसरी रकअत में सूरए अल—हम्मद के बाद दस बार सूरए इन्ना अन्ज़लनाह पढ़ा जाये। (पहली रकअ्त में बादे हम्द दो मर्तबा सूरए तौहीद और दूसरी रकअ्त में बाद हम्द दस मर्तबा अल—हाकुमुत तकासुर भी मरवी है) और सलाम के बाद कहेः अल्लाहुम्मा स्वल्ले अला मोहम्मद व आले मोहम्मद वबअस सवाबा हातैनिर रकअ्तैने इला क़ब्रे फ़लाँ इब्ने फ़लाँ। (खुदा वन्दे आलम मोहम्मद व आले मोहम्मद पर रहमत नाज़िल फ़रमा और उन दो रकअ्तों का सवाब फ़लाँ इब्ने फ़लाँ की क़ब्र को पहुंचा।)

अपने लिए नमाज

खुद को अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रखने के लिए अक्सर यह नमाज़ पढ़ा करे और नियत यह रहे कि अज़ाबे क़ब्र से महफ़ूज़ रहने के लिए यह नमाज़ पढ़ता हूँ। यह नमाज़ इशा के बाद पढ़े हर रकअ्त में सूरए हम्द एक मर्तबा और सूरए क़द्र तीन मर्तबा पढ़े और सलाम के बाद सजदे में जाकर यह दुआ पढ़े। अल्लाहुम्मा ला—तज़रनी फ़रदनै व फ़िल—क़ब्रे व

अन्नता ख़ैरूल वारिसीन।

नमाज़ जाफ़रे तय्यार

यूँ भी अक्सरो बेश्तर इस नमाज़ के पढ़ते रहने का बहुत ज़्यादा सवाब है मुशकिलात से निजात और मतालिब के हुसूल के लिए इस नमाज़ को पढ़ना मुजर्रब है अगर यह नमाज़ मरने वाले की तरफ़ से पढ़ी जाये तो उसकी तस्कीने रूह और तख़फ़ीफ़े अज़ाब का सबब होगी इस नमाज़ की तरकीब दुआओं की किताबों और तोहफ़तुल अवाम में मरकूम है।

दीगर नमाजें

(1) मकारमुल अख़्लाक़ में है कि फ़रज़न्द वालिदैन के लिए दो रकअ्त नमाज़ा (बेहतर है दरमियाने मग़रिब व इशा) इस तरह पढ़े। पहली रकअ्त में सूरए अल–हम्द के बाद दस मर्तबा रब्बिग़फ़िरली वले–वालिदैया व लिलमोमेनीना यौमा यकूमुल हिसाबो। और दूसरी रकअ्त में हम्द के बाद दस मर्तबा रब्बिग़फ़िरली वले–वालिदैया व लेमन दख़ला बैती मोमेनन व लिलमोमेनीना वल–मोमेनाते। और सलाम के बाद दोनों हाथ उठाकर दस मर्तबा पढ़े। रब्बिर्रहमहुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा।

(2) मकारमुल अख़्लाक़ में दूसरी नमाज़ इस तरीक़े पर बादे मग़रिब मरवी हैः हर नमाज़ में नियत करे दो रकअ्त नमाज़ हदय–ए–वालिदैन पढ़ता हूँ कुरबतन एलल्लाह। पहली ओर दसूरी रकअ्त सूरए हम्द के बाद बीस बीस मर्तबा पढ़े। रब्बिर्रहमहुमा कमा रब्बयानी सग़ीरा। और

सलाम के बाद दुआ के लिए दोनों हाथ बुलन्द करके दस मर्तबा यही कहे उसके बाद एक मर्तबा कहे: बे–हक़्क़े मोहम्मद व अहलेबैते मोहम्मद व सल्लल्लाहो अला मोहम्मद व आले मोहम्मद।

(3) जनाबे रसूले ख़ुदा[स0अ0] से मरवी है कि वालिदैन का हक़ अदा करने के लिए शबे जुमेरत मग़रिब व इशा के दरमियान दो रकअ्त नमाज़ (हदय–ए–वालिदैन) अदा करे। हर रकअ्त में सूरए हम्द सौ मर्तबा (सैय्यद इब्ने ताऊस ने एक मर्तबा भी नक़्ल फ़रमाया है) आयतल कुर्सी और चारों कुल पन्द्रह पन्द्रह मर्तबा और नमाज़ के बाद पन्द्रह मर्तबा इस्तेग़फ़ार के बाद कहे। अल्लाहुम्मजअल सवाबहू लेवालिदैया। (ख़ुदा वन्दा इसका सवाब वालिदैन के लिए क़रार दे।)

(4) मिसबाह कफ़अ्मी में जनाबे रसूले ख़ुदा[स0अ0] से मरवी है कि शबे जुमेरात मग़रिब व इशा के दरमियान इस तरह दो रकअ्त नमाज़ अदा करे कि हर रकअ्त में हम्द के बाद पाँच पाँच मर्तबा आयतुल कुर्सी और चारों कुल पढ़े ओर बादे सलाम पन्द्रह मर्तबा अस्तग़फ़िरूल्लाहा रब्बी व अतूबो एलैहे कहे और इसका सवाब वालिदेन को हदया करे।

(5) मिन्हाज में हदीस सही है कि इमाम जाफ़र सादिक़[अ0स0] हर शब वालिदैन और फ़रज़न्द के लिए इस तरीक़े पर दो रकअ्त नमाज़ पढ़कर हदिया फ़रमाते थे। पहली रकअ्त में बाद सूरए हम्द सूरए क़द्र और दूसरी रकअ्त में बादे सूरए हम्द कौसर। इस नमाज़ को हर शब

बादे इशा पढ़कर इसका सवाब हदिया करे और वही अलफ़ाज़ दोहराये जो नमाज़े वहशत के बाद कहे जाते हैं।

(6) इस नमाज़ को औलाद वालिदेन सबके लिए पढ़ा जा सकता है पहली रकअ्त में बादे हम्द सूरए क़द्र और दूसरी रकअ्त में बाद हम्द सूरए कौसर पढ़कर उसी तरह हदिया करे जैसा कि नमाज़ हदय–ए–मैय्यत में मज़कूर है।

दुआ

सफ़ीनतुन नजात में है कि औलाद को वालिदैन के लिए सहीफ़ा–ए–कामिला से दुआ नम्बर 24 पढ़ना चाहिए जो इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ0स0] पढ़ा करते थे। मुकम्मल दुआ सहीफ़–ए कामिला में निस्फ़ से पहले मौजूद है और वह इस तरह शुरू होती है। अल्लाहुम्मा स्वल्ले अला मोहम्मद अब्देका व रसूलेका।

ज़ियारते कुबूरे मोमेनीन

कुबूरे मोमेनीन की ज़ियारत का बे इन्तेहा सवाब है यूँ तो जब चाहे ज़ियारत कर सकता है लेकिन जुमेरात को अस्र का वक़्त ज़ियारते कुबूरे मोमेनीन के लिए बेहतरीन वक़्त है उसके बाद जुमा को अस्र का वक़्त है। शब के वक़्त ज़ियारते कुबूल में कराहियत है। जैसा कि पैग़म्बर[स0अ0] ने जनाबे अबूज़र से फ़रमायाः वला–तज़िरहुम अहयाना बिल्लैल।

मजमूआ शैख़ शहीद में हज़रत रसूले ख़ुदा[स0अ0] से मरवी है कि जब कोई क़ब्र के नज़दीक यह कलमात कहता है तो ख़ुदा वन्दे आलम उस से क़यामत तक के लिए अज़ाब दूर फ़रमा देता है तीन मर्तबा कहेः अल्लाहुम्मा इन्नी

असअलोका बेहक़्क़े मोहम्मद व आले मोहम्मद अन–ला–तोअज़्ज़िबा हाज़ल मैय्यते।

शैख़ अब्बास क़ुम्मी[अ०र०] ने मफ़ातीहुल जिनान में नक़्ल फ़रमाया है कि शैख़ जाफ़र इब्ने कौलुया क़ुम्मी ने अम्र बिन उसमान राज़ी से रिवायत की है उन्हों ने कहा मैं ने इमाम मूसा इब्ने जाफ़र[अ०स०] से सुना कि जो शख़्स हमारी ज़ियारत करे तो उसके लिए वही सवाब लिखा जायेगा जो हमारी ज़ियारत का सवाब है इसी तरह दोस्तदाराने अहलेबैत अ०स० के साथ नेकी व ऐहसान का भी सवबा तहरीर है।

कामिलुज़ ज़ियारात में हज़रत इमाम जाफ़र सादिक़[अ०स०] से रिवायत है कि सूरज निकलने से पहले जब ज़ियारत करे तो वह सुनते और जवाब देते हैं। और अगर सूरज निकलने के बाद ज़ियारत करे तो वह सुनते हैं और जवाब नहीं देते हैं। रिवायत में है कि जब क़ब्रिस्तान से गुज़रे तो सबसे बेहतर जो दुआ वहाँ पढ़े वह यह है। अल्लाहुम्मा वल्लेहिम मा–तुवल्लू वहशुरहुम मअ् मन अहब्बू।

हज़रत इमाम हुसैन[अ०स०] से रिवायत है कि क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो कर कहेः अल्लाहुम्मा रब्बे हाज़ेहिल अरवाहिल फ़ानियते वल–अजसादिल बालियते वल–ऐज़ामिन नख़ेरतिल लती ख़रजत मिनद्दुनिया व हिया बिका मोमेनतुद दख़ेला अलैहिम रूहन मिनका व सलामन मिन्नी। तो ख़ुदा वन्दे आलम उसके लिए जनाबे आदम से लेकर क़यामत तक की नेकियाँ लिखता है।

अब्दुल्लाह इब्ने सिनान से रिवायत है कि इमाम जाफ़र सादिक़[अ०स०] ने फ़रमाया किः मोमिनीन की क़ब्रों पर

इस तरह सलाम करो अस्सलामो अला अहलिद दियारे मिनल मोमिनीना वल मुस्लिमीना अन्तुम लना फ़र्तुन व नहनो इनशाअल्लाहो बिकुम लाहिकून।

अमीरूल मोमिनीन[अ0स0] ने फ़रमाया कि जब क़ब्रिस्तान में दाख़िल हो तो इस तरह सलाम करे तो खुदा वन्दे आलम सलाम करने वाले के लिए पचास साल की इबादत का सवाब लिखेगा और इस अमल के सबब इस के वालिदैन के और इस के पचास साल के गुनाह माफ़ फ़रमादेगा। सलाम यह है अस्सलामो अला अहले ला इलाहा इल्लल्लाहो मिन अहले ला इलाहा इल्लल्लाहो या अहले ला इलाहा इल्लल्लाहो बेहक़्क़े ला इलाहा इल्लल्लाह, कैफ़ा वजत तुम क़ौला ला इलाहा इल्लाल्लाहो मिन ला इलाहा इल्लल्लाहो या ला इलाहा इल्लल्लाहो बेहक़्क़े ला इलाहा इल्लल्लाह इग़्फ़िर बेमन क़ाला ला इलाहा इल्लल्लाहो वहशुरना फ़ी जुम्रते मन क़ाला ला इलाहा इल्लल्लाहो मोहम्मदुर रसूलुल्लाह अलीयुन वलीयुल लाह।

जवाहिरूल अख्बार में अल्लामा नूरी[अ0र0] ने अमीरूल मोमिनीन हज़रत अली[अ0स0] से रिवायत नक़्ल की है कि मैं ने पैग़म्बर–ए–इस्लाम से सुना कि जो शख्स क़ब्रों के बीच से गुज़रते वक़्त ला इलाहा इल्लल्लाह कहे तो खुदा वन्दे आलम उसके पचास साल के गुनाह बख़्श देता है। और अगर उसके गुनाह इतने न हों तो उसके वालिदैन उसकी बीवी और तमाम मुसलमानों के गुनाह बख़्श देता है।

मिस्बाहुज़ ज़ाइर में सैयद इब्ने ताऊस[रह0] ने मुहम्मद

इब्ने मुस्लिम से रिवायत नक़्ल की है कि वह कहते हैं कि मैं ने इमाम जाफ़र सादिक़[अ0स0] से पूछा क्या मैं मुर्दों की ज़्यारत करूँ?फ़रमाया हाँ।मैं ने कहा क्या उन को खबर होती है।फ़रमाया खुदा की क़सम खबर होती है और वह तुम से खुश होते हैं मैं ने कहा क्या कहा करूँ? फ़रमाया अल्लाहुम्मा जाफ़िल अर्ज़े अन जुनुबेहिम व साइद इलैका अरवाहा हुम लक़्क़ेहिम मिन्का रिज़्वानन वस्कुन इलैहिम मत तसला बिही वह दताहुम व तुनिस बिही वह शताहुम इन्नका अला कुल्ले शैइन क़दीर।

जमालुल असबुउ में सैय्यद[रह0] ने लिखा है कि ज़्यारत करने वाले को चाहिए कि रू ब क़िब्ला होकर अपना हाथ क़ब्र पर रखे और कहे अल्लाहुम्मल अन गुरबतहू व सिल वह दताहू व आनिस वहशताहू व आमिन रौअताहू वस कुन इलैहे मिन रहमतिका रहमतन यसफिनी बिहा अन रहमतिम मिन सिवाका वल हिक़्हु बेमन काना यतावल्लाहो फिर सात बार सूरह क़द्र पढ़े।

इमाम अली रिज़ा[अ0स0] ने अली इब्ने हिलाल से फ़रमाया कि जो शख़्स किसी मोमिन भाई की क़ब्र पर आये और क़ब्र पर हाथ रख कर सात बार सूरह क़द्र पढ़े तो हश्र (मरने के बाद हिसाब वाला दिन) के डर से बचा रहेगा। (क़िब्ला की तरफ़ मुंह हो तो और अच्छा है।)

अइम्मा से रवायत है कि क़ब्रिस्तान में सूरह यासीन का पढ़ना क़ब्र वालों के अज़ाब में कमी की वजह होता है।इन से यह भी रवायत है कि जो शख़्स 11 बार सूरह कुल

हुवल्लाह पढ़ कर इसका सवाब मुर्दों को ईसाल (पहुँचाये) करे तो खुदा वन्दे आलम मरने वालों की तादाद (संख्या)के बराबर इस के लिए सवाब और नेकियाँ लिखता है।(मुस्तहब है कि क़ब्र पर हाथ रख कर पढ़े और अगर क़ब्र सुलहा(नेक लोग) उलेमा (इल्मे दीन जानने वाले) और नेक मुमिनीन की है तो बाद में अल्लाह से की जाने वाली दुआ कुबूल होती है।)11 बार सूरह तौहीद(कुल हुवल्लाह)हाथ उठाकर पढ़ना भी रवायत में आया है।

रसूले खुदा[स0अ0] से रिवायत है कि क़ब्रिस्तान में आयतु कुर्सी पढ़ने का बहुत ज़्यादा सवाब है यह भी रिवायत में आया है। जमालुल सालेहीन में आँहज़रत[स0अ0] से रिवायत है कि जो कोई क़ब्रिस्तान में कुरआन की आयत पढ़ कर इस का सवाब मुर्दों को बख़्शे (पहुँचाये) तो खुदा वन्दे आलम उसे सत्तर पैग़म्बरों का सवाब अता करता है। सूरह हम्द, चारों कुल,आयतुल कुर्सी हर एक को तीन तीन बार पढ़े तो ज़्यादा अच्छा है।

ईसाले सवाब

पैग़म्बरे इस्लाम[स0अ0] ने फ़रमाया है कि मुर्दा खुश होता है उस पर रहमत भेजने से और उसके लिए इसतिग़फ़ार (गुनाहों की खुदा से माफ़ी माँगना) करने से जिस तरह ज़िन्दा खुश होता है इस के पास तोहफ़ा भेजने सें इस लिए मुर्दा के नाम पर बल्कि इस की तरफ़ से हर नेक काम करना चाहिए। मोहम्मद[स0अ0] व आले मोहम्मद[स0अ0] पर बहुत सलवात पढ़ना करबला के प्यासों के नाम पर प्यासों को पानी

पिलाना, रसूल के खानदान के शहीदों पर आँसू बहाना, मोहब्बत के साथ मोहम्मद[स0अ0] व आले मोहम्मद[स0अ0] का तज़किरा (याद करना) इन सब कामों से बहुत ज़्यादा सवाब मिलता है चाहे अपने लिए करे या मरने वाले के लिए करें।

आयतुल्लाह दस्तग़ैब शहीद ने मआद (किताब का नाम) में नबी से रिवायत लिखी है कि मैंने अपने चचा जनाबे हमज़ा सैय्यदुश शोहदा को (शहीद होने के बाद) देखा कि एक तबक़ (बरतन) जन्नत का अनार से भरा हुआ इनक सामने रखा हुआ है और वह इस में से खा रहे हैं अचानक अनार ताज़ा खुर्मा बन गया पैग़म्बर[स0अ0] ने अपने चचा से पूछा कि वहाँ आलमे बरज़ख (क़यामत से पहले मरने के बाद जहाँ रूहें रहती हैं) में कौन सी चीज़ ज़्यादा मुअस्सिर (असरदार) है कहने लगे यहाँ तीन चीज़ें ज़्यादा काम आने वाली हैं (1) प्यासे को पानी पिलाना) (2) आप और आप की आल (औलाद, बेटे) पर सलवात पढ़ना (3) अली इब्ने अबी तालिब[अ0स0] की मोहब्बत।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ0स0] फ़रमाते हैं: इन्नल कौसरा अशद दो फ़रहन लेबाकिल हुसैन (हुसैन[अ0स0] पर रोने वाले जब हौज़े कौसर पर पहुँचेंगे तो कौसर(दूध की नहर,जो शहद से ज़्यादा मीठी है) बहुत खुश होगा।

सदक़ा

कभी कभार मैय्यत के लिए सदक़ा देते रहना बहुत फ़ायदे की चीज़ है और दोनों के लिए फ़ायदे की चीज़ है बल्कि मैय्यत की तरफ़ से सदक़ा देना ज़्यादा अच्छी बात है।

जामेउल अख्बार में पैग़म्बर के कुछ साथियों साथियों से यह बात नक़ल की गयी है कि ऑहज़रत ने फ़रमाया अपने मुर्दों को हदिया भेजा करो असहाब (साथियों) ने कहा कौन सा हदिया (तोहफ़ा) फ़रमाया सदक़ा व दुआ। फ़रमाया मोमिनीन की रूहें हर शबे जुमा आसमाने दुनिया पर अपने घरों के मुक़ाबिल आती हैं और ग़मगीन हालत में रोते हुए कहती हैं ऐ मेरे घर वालो और ऐ मेरे वालिदैन और रिश्तेदार इस माल से जो हमारे हाथ में था मेहरबानी करो इस माल से हिसाब व किताब तो हम पर है फ़ाएदा हमारे ग़ैर के लिए अल्लाह की राह में एक दिरहम (सिक्का) ऐक रोटी या एक कपड़ा देकर हम पर रहम करो इस के बाद रसूले खुदा भी रोनो लगे और असहाब भी रोये ऑहज़रत इतना रोये कि फ़रमाया कि रोने कि वजह से बात नहीं कर सकते थे आप ने फ़रमाया यह तुम्हारे दीनी भाई हैं कि जिन्हें मिट्टी ने ढॉप रखा है इस से पहले खुश थे आप ने फ़रमाया मुर्दों के लिए सदक़ा जल्दी दिया करो।

मुल्ला हुसैन नूरी ने कलेमा–ए–तैयबा में लिखा है कि किसी ने एक अमीर खुरासान को ख्वाब में यह कहते हुए सुना कि जो सदक़ा हो सके मुझे भेजो जो कुच्छ तुम अपने मुर्दों को देते हो वह उनके लिए फ़यदे की चीज़ है।

कुतुब रावन्दी अलैहिर रहमा ने फ़रमाया कि इमामों से रवायत है कि रमज़ानुल मुबारक में हर जुमा की रात(और दूसरी रवायत में है कि हर एक महीना हर जुमा की रात) मोमिनीन की रूहें आती हैं और दुआ और सदक़ा के बारे में पूछते हैं और कहते हैं कि रहम करो हम पर इस से पहले कि तुम भी हमारे जैसे होजाओ क़रीब है कि तुम अपने उपर रोओगे मगर कोई फ़ायदा नहीं होगा जिस तरह हम रोते हैं और कोई फ़ायदा नहीं।

रिसालह–ए–सादिया में अल्लामा हिल्ली ने लिखा है कि रसूले खुदा[स0अ0] ने फ़रमाया है कि सदक़ा पाँच तरह का होता है। (1) आम सदक़ा इस में दस गुना सवाब है। (2) मुसीबत के मारे लोगों को सदक़ा देना इस में सत्तर गुना सवाब है। (3) अपने अज़ीज़ों। (रिश्तेदारों)पर ख़र्च इस पर सात सौ गुना सवाब है। (4) आलिमों पर ख़र्च करने में सात हज़ार गुना सवाब है। (5) मुर्दों के लिए सदक़ा देने में सत्तर हज़ार गुना सवाब है।

रसूले खुदा[स0अ0] से रवायत की गयी है कि जो सदक़ा किसी मरने वाले के लिए दिया जाता है तो फ़रिश्ता उसे एक नूर के तबक़ (बर्तन) में लेता है और इस तबक़ की रौशनी सात आसमानों तक जाती है मलक तबक़ को लेकर क़ब्र के किनारे खड़ा होता है और कहता हैः ''अस्सलामो अलैकुम या अहलल क़ुबुर'' तुम्हारे घर वालों ने हदिया (तोहफ़ा) भेजा है पस वह उसे लेकर क़ब्र के अन्दर जाता है और मैय्यत की रहने की जगह बढ़ जाती है। आँहज़रत[स0अ0] ने फ़रमाया जो

शख्स किसी मैय्यत पर सदक़ा से मेहरबानी करे उसे कोहे उहद के बराबर सवाब मिलेगा सदक़ा देने वाला क़्यामत के दिन अल्लाह के अर्श के साये में होगा। हज़रत[स0अ0] ने यह भी फ़रमाया कि हलाल, जायज़ माल से सदक़ा दिया करो खुदा सिवाये हलाल माल के सदक़ा क़ुबूल नहीं करता।

एक अमल

हाजत मन्द, ज़रूरत वाला शख्स मोमिनीन की क़ब्रों की ज़्यारत के लिए जाये और मुमकिन हो तो क़ब्र पर एक फूल रखे (कि मुर्दों को खुशबू पसन्द है) और एक एक सलवात हर क़ब्र को हदिया करे उस के बाद कोई सूरह पढ़ कर तमाम मुर्दों को हदिया करे फिर खुदा से अपने लिए दुआ करे थेड़े दिनों में हाजत पूरी होगी। (ज़ादुस सालेहीन)

फातेहा

बेहतर यह है कि मुर्दे की रूह को तसकीन देने के लिए एक बार सूरह हम्द तीन बार सूरह तौहीद पढ़ कर बख़्श दिया करे। पास खाना, मीठी चीज़ और फ़लों और इसी तरह की दूसरी पाक चीज़ों पर कम से कम एक बार सूरह हम्द पहले व बाद सलवात पढ़ कर कहे इन सूरों का सवाब और इस माहज़र को मैंने मासूमीन अलैहमुस सलाम की खिदमत में हदिया किया और इसका जो सवाब हासिल हुआ इसे फ़लाँ इब्ने फ़ुलाँ की रूह को बख़्श दे या फिर इस खाने को किसी भूखे मोमिन को खिला दे और अगर कोई न मिले तो कोई मोमिन खा सकता है। इसमें कोई खराबी नहीं है। खुदा वन्दे आलम नीयत पर सवाब देता है और अपनी

कुदरत से हदिया की जाने वाली चीज़ को बेहतर शक्ल में मुर्दों के लिए पेश करता है।

रूहों के रहने की जगह

हदीसों और रिवायात से पता चलता है कि मोमेनीन के रहने की जगह वादियुस सलाम (नजफ़े अशरफ़) है लेकिन यह रूहें खुदा की इजाज़त से अपने घर वालों को देखती रहती हैं और इस इन्तेज़ार में रहती हैं कि घर वाले उन की मग़्फ़िरत के लिए कुछ करें। (जो मोमिन नहीं हैं उन लोगों के रहने की जगह वादिये बरहूत है)

अल्लामा मजलिसी[रह0] ने हक़्क़ुल यक़ीन में आलमे बरज़ख के ब्यान में कई रिवायतें नक़्ल की हैं जिन में आमाल और क़द्र व मन्ज़िलत (ऊँचाई, बुलन्दी) के एतेबार से रूहों के रोज़, तीसरे दिन हफ़्ते में साल में आने के बारे में बताया गया है। कुछ किताबों में शबे जुमा (जुमा की रात) और जुमा का दिन रूहों के आने को बताया गया है। कुछ रिवायतों में ज़वाले आफ़ताब (सूरज का ढलना) रूहों के आने का वक़्त बताया गया है। जो भी हो जब खुदा की इजाज़त मिलती है तब रूहें आती हैं।

मोहद्दिस जज़ायरी ने अनवारे नोमानिया में इमाम जाफ़र सादिक़[स0अ0] की यह हदीस नक़्ल की है कि: रूहें वादीयुस्सलाम (नजफ़े अशरफ़) में रहती हैं मगर इनका तअल्लुक़ उनकी क़ब्रों से बाक़ी रहता है यानी इनको इनकी क़ब्रों पर आने वालों के बारे में मालूम रहता है। और वह उन्हें जानती पहचानती हैं एक रिवायत में है कि क़ब्र पर आने

वाले से इन्हें लगाव रहता है और उन की वापसी पर रूहें डरी सहमी रहती हैं।

मोमेनीन की रूहें वादीयुस्सलाम में अपने पहली शक्ल व सूरत में रहती हैं।अमाली शेख तूसी[रह0] में इमाम जाफ़र सादिक़[अ0स0] की एक हदीस नक़्ल की है कि: खुदा जब मरने वाले की रूह क़ब्ज़ करता है यानी जब किसी को मौत देता है तो उसे दुनिया वाली शक्ल व सूरत में भेज देता है वहाँ वह खाते पीते हैं दूसरी हदीस में है कि: रूहें एक दूसरे से मिलती हैं सवाल जवाब करती हैं और एक दूसरे को पहचानती हैं यहॉ तक कि अगर तुम इन में से किसी को देखोगे तो कहोगे यह फ़लॉ शख्स है।

इमाम के फ़रमाने का मतलब यह है कि मोमेनीन की रूहें नही आने वाली रूह से लोगों के हालात पूछती हैं और अगर इन्हें यह बताया जाता है कि फ़लाँ शख़्स मर गया (लेकिन यहाँ नहीं पहुँचा) तो वह समझ जाती हैं कि वह वादी–ए–बरहूत में भेज दिया गया।

असबग़ इब्ने नबाता रावी हैं कि मैं ने अमीरूल मोमेनीन को देखा कि बाबे कूफ़ा पर सहरा (जंगल) की तरफ़ रूख किये हुए खड़े हैं और जैसे किसी से बातें कर रहें हैं मैं थक के बैठ गया फ़िर खड़ा हुआ और पूछा या अमीरूल मोमेनीन[अ0स0]आप किस से बातें कर रहे थे आप ने फ़रमाया मैं मोमेनीन की रूहों से दिल बहला रहा था।

मोमेनीन पर मरते ही अल्लाह की रहमत के दरवाज़े खुल जाते हैं लेकिन अगर इन पर किसी का कुछ रह गया है तो इन्हें सख़्तियाँ झेलनी पड़ती हैं इसलिए मरने वाले के

करीबी लोगों को कोशिश करना चाहिए कि मरने वाले का अगर किसी पर कुछ रह गया है तो उसे चुकता करें उस के बाद अल्लाह की मेहरबानी पर भरोसा,उम्मीद रखें। जिस का सिलसिला मौत से शुरू हो जाता है। कुछ हदीसों से पता चलता है कि पैग़म्बरे इस्लाम[स0अ0] अमीरूल मोमेनीन[अ0स0] पन्जतन पाक[अ0स0] बल्कि मासूमीन[अ0स0] मोमेनीन की मौत के वक़्त आते हैं जिस से मौत की सख़्ती आसान होती है।बिहारूल अनवार में अल्लामा मजलिसी[रह0] ने पॉचवें इमामा की हदीस नक़्ल की है कि करने वाला मोमिन इस दुनिया से नहीं जाता मगर यह कि आख़री साँस में फ़रिशते हौज़े कौसर का पानी इसे पिलाते हैं।

अमल जारी रहे

इसमें कोई शक नहीं कि ख़ुदा की बारगाह फ़ज़ल व करम की भी है और अदल व इनसाफ़ भी।वह अपने फ़ज़ल व करम से बन्दों के गुनाह माफ़ करता है। लेकिन किसी का हक मारने वाले या न देने वाले का हिसाब, किताब भी लेता है। इस लिए इतमीनान से सुकून से न बैठ जाना चाहिए बल्कि खुद को भी कोशिश से अल्लाह और बन्दों का हक़ मारने से बचाना चाहिए। और अपने वालिदैन और रिश्तेदार जो दुनिया में नहीं रहे के हक़ जो रह गये हों उनको भी चुकाना चाहिए। खुदा वन्दे आलम रहीम है करीम है इसलिए उसने बन्दों को इस जानिब दिलचसपी पैदा करने के लिए क़ब्रों की ज़ियारत और मुर्दों के लिए मग़्फ़िरत (गुनाह की माफ़ी) की दुआ करते रहने में हद से ज़्यादा सवाब रखा है।

इस सिलसिले में कुछ ख़ास तारीखों और दिनों को ख़ास अहमियत, खुसूसियत (मुख्यता) दी गयी है।

जुमेरात का दिन

सैय्यद अली इब्ने ताउस शेख नक़ी–उद–दीन इब्राहीम कफ़अमी[रह0] लिखते हैं कब्रों की ज़्यारत मुस्तहब है।

जुमा का दिन

शेख मुफ़ीद[रह0] ने अब्दुल्लाह इब्ने सुलैमान की रिवायत नक़्ल की है कि मैं ने इमाम मोहम्मद बाक़िर[अ0स0] से क़ब्रों की ज़्यारत का सवाल किया तो आप ने फ़रमाया जुमा के दिन कब्रों की ज़्यारत करो ओर अगर इन क़ब्र वालों में से किसी पर क़ब्र की तंगी है तो उसे बढ़ा दी जायेगी। शेख़ ज़ैनुल आबेदीन शहीदे सानी[रह0] ने रिसाला–ए–जुमा में रसूले खुदा[स0अ0] की हदीस नक़्ल की है कि जो शख़्स हर जुमा वालिदैन या उन में से किसी एक की क़ब्र की ज़्यारत करे तो खुदवन्दे आलम उस के गुनाह बख्श देगा और उसका शुमार नेक बन्दों में करेगा।

हसन इब्ने अब्दुल रज़्ज़ाक़ लाहजी ने जमालुस सालेहीन में मासूम का क़ौल लिखा है कि जो शख़्स जुमा के दिन वालिदैन की क़ब्रों की ज़्यारत करे उसके लिए एक सही हज का सवाब लिखा जाता है और फ़ातिहा पढ़ने के बाद जो हाजत माँगे खुदावन्दे आलम क़ुबूल फ़रमाता है।

इमाम हुसैन[अ0स0] ने फ़रमाया कि जनाब सलमान

फ़ारसी जुमा के दिन क़ब्रिस्तान से गुज़रे और ठहर कर सलाम किया। जब बिस्तर पर सोये ख़्वाब में एक शख़्स को देखा वह कह रहा था ऐ सलमान तुम हमारे पास आये थे और हम पर सलाम किया था और हम ने सलाम का जवाब दिया था।

पैग़म्बरों का तरीक़ा

क़ब्रों की ज़्यारत और वालिदैन के हक़ में दुआ व नेकी करते रहना नबीयों का तरीक़ा है।जब रसूले खुदा[स0अ0] मदीना में थे तो पाबन्दी से बक़ी (क़ब्रिस्तान का नाम) में ज़्यारत के लिए जाया करते थे। कुरआन मजीद में बहुत से नबीयों के बारे में लिखा है कि वह वालिदैन के लिए दुआयें करते थें।

हुक़ूक़ क्या हैं?

यह सही है कि एक मोमिन का दूसरे मोमिन पर हक़ है लेकिन वालिदैन के हुक़ूक़ औलाद (बच्चों) पर बहुत ज़्यादा हैं।इन का औलाद पर हक़ यह है कि दुनिया इन के साथ अच्छा सुलूक करे और मरने के बाद इन कि लिए ईसाले सवाब करे और उन के हुकूक को चुकाये और जब खुदा वन्दे आलम दूसरों के हुक़ूक को बर्बाद करना पसन्द नहीं करता तो वालिदैन के हुकूक को कैसे बर्बाद होना चाहेगा। वालिदैन और रिश्तेदारों के साथ नेकी करने का कुरआने मजीद में कई जगह पर हुक्म आया है ।

फ़िशारे क़ब्र

फ़िशारे क़ब्र की यह वजहें बयान की गयी हैं खुदा की नेअ्मतों का बर्बाद करना, नेमत मिलने पर भी खुश न होना, पेशाब की निजासत (अपवित्रता, नापाकी) से परहेज़ न करना, ग़ीबत करना (पीठ पीछे किसी की बुराई करना), इल्ज़ाम लगाना, और घर वालों के साथ बद अख़्लाक़ी (अभद्रता) से पेश आना।

मआद में आयतुल्लाह दस्तग़ैब शहीद[रह0] ने लिखा है कि साद इब्ने मआज़ अन्सारी सारे मुसलमानों और खुद रसूले खुदा[स0अ0] के नज़दीक खुसूसी इज़्ज़त व एहतेराम वाले थें।एक बार सवार होकर आरहे थे तो रसूले खुदा[स0अ0] ने मुसलमानों को हुक्म दिया कि इन के लिए आगे बढ़ें खुद रसूले खुदा[स0अ0] जब यह आते थे तो उठ जाते थे। यहूदियों के एक मामल में आपने साद को ही हुक्म मुअइयन किया था। इनके जनाज़े में सत्तर हज़ार फ़रिश्ते शामिल थे आँहज़रत ने नंगे पैर चारों तरफ़ से इनके जनाज़े को काँधा दिया था और फ़रमाया फ़रिश्तों की सफ़ें (लाइनें) साद के जनाज़े के साथ साथ चल रही थीं। और मेरा हाथ जिबरईल के हाथ में था पैग़म्बर ने उन की मैय्यत को खुद अपने हाथ से क़ब्र में उतारा। जनाब साद की मॉ ने कहा साद तुम्हें जन्नत मुबारक हो रसूले खुदा[स0अ0] ने साद की माँ से कहा तुम्हें कैसे पता चला कि साद जन्नत वालों में से हैं? अभी तो

साद के साथ फ़िशारे क़ब्र हो रहा है।

एक रिवायत में आया है कि चूँकि साद अपने घर वालों के साथ बद अख़लाक़ी (बुरा बर्ताव) करते थे।

गुनाहों की क़िस्में

अमीरूल मोमिनीन[अ0स0] का नहजुल बलाग़ा में एक क़ौल है कि गुनाह तीन तरह के हाते हैं एक वह जो माफ़ कर दिया जाये, दूसरा वह जिस के लिए यह आसरा उम्मीद हो कि माफ़ कर दिया जायेगा, तीसरा वह जो माफ़ होने वाला नहीं है। (नहजुल बलाग़ह)

वह गुनाह जो माफ़ कर दिया जायेगा वह है जिसकी दुनिया में इस्लामी अदालत में सज़ा दी जा चुकी हो। खुदा इस से बुलन्द है कि एक गुनाह पर दोहरी सज़ा दे। माफ़ी की उम्मीद इस गुनाह पर है जिसकी सज़ा दुनिया में तो न दी गयी हो लेकिन उसने तौबा कर ली हो। तीसरा गुनाह माफ़ होने के क़ाबिल नहीं वह एक दूसरे पर हक़ है जो बाक़ी रह गया हो असल में यही हुक़ूकुन नास (लोंगों के हक़) हैं जिन्हें खुदा माफ़ न करेगा जब तक वह बन्दा माफ़ न करे जिसका हक़ हैं।

खुदा वन्दे आलम हमें हुक़ूक़ चुकाने की तौफ़ीक़ अता फ़रमाये ख़ास कर वालिदैन के हुक़ूक़ को उनके साथ अच्छी तरह पेश आने अच्छा सुलूक करने को खुदा बहुत पसन्द करता है।

इमाम मुहम्मद बाक़िर[अ0स0] ने फ़रमाया है कि छुप कर सदक़ा देना अल्लाह के गुस्से को ख़त्म करता है और

वालिदैन के साथ नेकी और रिश्ता निभाने से उम्र बढ़ती है।

बरजख

लुग़त में बरज़ख़ के मानी ऐसे पर्दे के हैं जो दो चीज़ों के दरमियान वाक़े हो और उन दोनों को एक दूसरे से मिलने न दे मसलन दरिया–ए–शोरो शीरीं दोनों मौजें मार रहे हैं लेकिन खुदा–ए–ताला ने उनके दरमियान एक ऐसा मानेअ् क़रार दिया है कि उनमें से एक दूसरे पर हावी नहीं हो सकता। (सूरए रहमान) और इसी को बरज़ख़ कहते हैं। लेकिन इस्तेलाह के मुताबिक़ बरज़ख़ एक ऐसा आलम हैं जिसे खुदा वन्दे आलम ने दुनिया व आख़िरत के दरमियान क़ायम फ़रमाया है ताकि यह दोनों अपनी अपनी खुसूसियत और कैफ़ियत के साथ बाक़ी रहें। यह दुनियवी व उख़रवी उमूर के बीच एक आलम है। बरज़ख़ में सर का दर्द, दाँतों का दर्द या दूसरे अमराज़ और दर्द मौजूद नहीं हैं। यह सब इस आलमे माद्दी के तरकीबात का लाज़िमा हैं। अलबत्ता इस जगह मुजर्रदात हैं। जिनका माद्दे से तअल्लुक़ नहीं है। लेकिन वह सरीही तौर से आख़िरत भी नहीं है।

मौत की हकीकत:

अक्सर लोग यह ख़याल करते हैं कि मौत एक अदमी अम्र और फ़ना हो जाना है। नहीं! यह नज़रया इस चीज़ के जो कि कुर्आने मजीद में बयान हुई है और उन दलीलों के ख़िलाफ़ है जिनकी तरफ़ अक़्ल राहनुमाई करती है कुरआन

की रौ से मौत एक वजूदी चीज़ है एक दुनिया से दूसरी दुनिया की तरफ़ मुन्तक़िल होना है। यही वजह है कि कुरआन की बहुत सी आयात में मौत आने के लिए ''तूफ़ी'' का लफ़्ज़ इस्तेमाल हुआ है जिसके मानी वापस लेने और फ़्घरिश्तों के ज़रिया रूह को बदन से क़ब्ज़ करने के हैं।

बाज़ इस्लामी रिवायात में वारिद हुआ है कि इन्सान के लिए तीन दिन बहुत ज़्यादा वहशतनाक हैं। 1. जिस दिन वह पैदा होता है और उस अन देखे जहान को देखता है। 2. जिस दिन वह मरता है और मौत के बाद की दुनिया देखता है। 3. जिस दिन अरसा—ए—महशर में वारिद होगा और उनके अहकाम को देखेगा जो इस दुनिया में नहीं थे। (तफ़सीर नूरूस सक़्लैन जि / 3, पेज / 327)

ख़ुदा वन्दे आलम ने इन तीनों दिनों के लिए हज़रत यहिया बिन ज़करिया के बारे में फ़रमायाः सलाम हो उन पर जिस दिन वह पैदा हुए, सलाम हो उन पर जिस दिन वह दुनिया से उठे, सलाम हो उन पर जिस दिन वह ज़िन्दा उठाए जायेंगे। (सूरए मरयम आयत 15)

हज़रत ईसा[अ0स0] की ज़बानी नक़्ल हुआ हैः सलाम हो मुझपर जिस दिन पैदा हुआ, सलाम हो मुझपर जिस दिन मैं दुनिया से इन्तेक़ाल करूंगा, सलाम हो मुझपर जिस दिन मैं ज़िन्दा उठाया जाऊंगा।

इमाम जाफ़र सादिक़[अ0स0] फ़रमाते हैंः मौत की याद इन्सान की शहवानी ख़्वाहिशों को भुला देती है। (मजमूआ वराम पेज / 268) लज़्ज़तों को बर्बाद करने वाले को याद करो, अर्ज़ किया गयाः ऐ अल्लाह के रसूल[स0अ0]! यह क्या है?

फ़रमायाः मौत जैसाकि पहले बयान किया जा चुका है। इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०स०] ने मौत की याद को शहवतों को ख़त्म करने का सबब क़रार दिया है। दूसरे यह कि इन्सान अपने नफ़्स का ख़याल रखे और उसे अज़ाबे ख़ुदा से डरने का आदी बनाए कि यह भी शहवतों को भुलाने का बाइस होता है। इससे भी ज़्यादा अहम इस बयान के आख़िर में फ़रमाते हैंः अज़ीम व बरतर ख़ुदा से मदद तलब करना है अगर जवान ख़ुदा को याद करें और हर हाल में उसको हाज़िर व नाज़िर समझें तो वह उन्हें निजात बख़्शेगा, जैसाकि हज़रत यूसुफ़[अ०स०] ने ख़ुदा से अर्ज़ की थीः अगर तू मुझ से औरतों के मक्रो फ़रेब को दूर नहीं करेगा तो मैं भी इन्सानी तबियत की बिना पर उनकी तरफ़ माए हो जाऊंगा। (सूरए यूसुफ़ आयत 53)

मौत क्या है ?

इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ०स०] से दरयाफ़्त किया गया कि मौत क्या है? फ़रमायाः मोमिन के लिए तो मैले और जूओं से भरे लिबास को उतारने और मज़बूत ज़ंजीरों और बन्दिशों को तोड़ने और फ़ाख़ेरा लिबास को गंदे लिबास से बदलने और मानूस मन्ज़िल में जाने के मिस्ल है। और काफ़िर के वास्ते फ़ाख़ेरा लिबास उतारने और वहशतनाक व ना मानूस मन्ज़िल में मुन्तक़िल होने के मानिन्द और अज़ीम अज़ाब है। (किफ़ायतुल मुवह्हेदीन जि/3, पेज/203)

हुकूके वालिदैन और बाज दूसरे हुकूकः

इमाम ज़ैनुल आबेदीन[अ0स0] की नज़र में:

माँ का हक़ः तुम्हारे ऊपर तुम्हारी माँ का हक़ यह है कि तुमको यह मालूम होना चाहिए कि वह तुम्हें एक मुद्दत तक पेट में इस तरह उठाए रही कि इस तरह कोई किसी को नहीं उठाता है। यानी नौ माह तक तुम्हारे अमल को अपने शिकम में रखा और अपने मेवा–ए–दिल दूध से तुम्हें ख़ूराक दी कि इस तरह कोई किसीको ख़ूराक नहीं देता। अपने कान, आँख, हाथ, पैर, बाल, खाल बल्कि अपने तमाम आज़ा व जवारेह के साथ ख़ुशी ख़ुशी तुम्हारा बोझ उठाए फिरती रही। अगरचे उसकी वजह से मुसलसल ज़हमतों और तकलीफ़ों और मुशकिलों में मुब्तेला नहीं, यहाँ तक कि दस्ते कुदरत ने तुम्हें उससे जुदा कर दिया और तुम्हें ज़मीन पर उतार दिया तो उसने तुम्हें शिकम सैर किया ख़ुद भूखी रही तुम्हें लिबास पहनाया ख़ुदा उरियां रहीं, तुम्हें सेराब किया ख़ुद पयासी रही, ख़ुद धूप की शिद्दत में रही तुम्हें साये में रखा। उसकी बेचैनियों में तुमने आराम पाया, ख़ुद बेदार रही तुम्हें सुलाया उसका पेट तुम्हारा मस्कन, उसका घर तुम्हारी हिफ़ाज़त का महल था उसके पिस्तान तुम्हारे दूध पीने के लिए चश्मा और उसका नफ़्स तुम्हारा निगहबान था तुम्हारे लिए उसने सर्दी व गर्मी को बरदाश्त किया उसकी इन

ज़हमतों और तकलीफ़ों का शुक्रिया अदा करो लेकिन तुम खुदा की मदद व तौफ़ीक़ के बग़ैर अपनी माँ का शुक्रिया अदा नहीं कर सकते।

बाप का हक़: तुम्हारे ऊपर तुम्हारे बाप का हक़ यह है कि तुम्हें यह मालूम होना चाहिए कि वह तुम्हारी अस्ल व बुनियाद है और तुम उसकी शाख़ व फ़राह हो अगर वह न होते तो तुम्हारा वजूद न होता बस जब तुम अपने अन्दर कोई ऐसी चीज़ देखो कि जो तुम्हें खुद पसन्दी में मुबतिला कर दे तो उस वक़्त तुम यह ख़याल करो कि इस नेअ्मत का सबब तुम्हारा बाप है और उसपर खुदा का शुक्र व सना करो और खुदा की ताक़त के अलावा कोई ताक़त नहीं है।

औलाद का हक़: तुम्हारे ऊपर बेटे का यह हक़ है कि तुम यह जान लो कि वह तुम्हारा ही है दुनिया में तुम्हीं से वाबस्ता है तुम ही उसकी अस्ल व असास हो और उसका ख़ैर व शर भी तुम्हारी ही तरफ़ मन्सूब होता है और यह ज़िम्मेदारी तुम्हारी है कि उसे अदब सिखाओ, उसके परवर दिगार की तरफ़ उसकी राहनुमाई करो और उसकी इताअत में उसकी मदद करो अगर तुम इस ज़िम्मेदारी को पूरा करोगे तो सवाब पाओगे और अगर उसकी अन्जाम देही में कोताही करोगे तो सज़ा पाओगे। बस उनके लिए इस तरह नेक अमल करो, उसका हुस्नो जमाल दुनिया में आशिकार हो जाए और उसकी जो बेहतरीन सरपरस्ती तुमने की है और जो नतीजा तुमने हासिल किया है वह खुदा की बारगाह में तुम्हारे और उसके दरमियान एक उज़्र हो जाए।

भाई का हक़: तुम्हारे भाई का हक़ तुम्हारे ऊपर

यह है कि तुम्हें मालूम होना चाहिए कि तुम्हारा हाथ है और तुम्हारे लिए पुश्तपनाह है कि जहाँ तुम पनाह चाहते हो वह तुम्हारी इज़्ज़त है कि जिस पर तुम एतेमाद करते हो और वह तुम्हारी कुव्वत है कि जिसके ज़रिया तुम हमला करते हो बस उसे ख़ुदा की मासियत व नाफ़रमानी का ज़रिया व हर्बा न बनाओ और उसके वसीले से ख़ुदा की मख़लूक़ पर ज़ुल्म न करो तुम उसके हक़ में उसकी मदद करो और उसके दुश्मन के ख़िलाफ़ उसकी नुसरत करो उसके और शैतान के दरमियान हाएल हो जाओ और उसे नसीहत करने में पूरा हक़ अदा करो और उसे ख़ुदा की तरफ़ बुलाओ फिर अगर वह अपने परवरदिगार का मुतीअ् हो जाए और उसके हुक्म को तस्लीम करे तो अच्छा, वरना तुम्हारे नज़दीक ख़ुदा को मुक़द्दम होना चाहिए और उसे तुम्हारे लिए अज़ीम होना चाहिए।

शरीके हयात का हक़: निकाह के ज़रिया जो हक़ तुम्हारे ऊपर मुसल्लम हो गया है वह यह है कि तुम यह जान लो कि उसे ख़ुदा ने तुम्हारे बाइस सुकून व आराम और मूनिस व अनीस और निगहबान क़रार दिया है इसी तरह तुम दोनों पर यह फ़र्ज़ है कि अपने शरीके हयात के वजूद पर ख़ुदा का शुक्र अदा करे और यह जान ले कि यह ख़ुदा की नेअ्मत है जो उसने उसे अता की है इसलिए ज़रूरी है कि वह ख़ुदा की नेअ्मत की क़दर करे और उसके साथ नर्मी से पेश आए अगर तुम्हरी शरीके हयात पर तुम्हारा हक़ ज़्यादा सख़्त है और जो तुम पसन्द करते हो और जो पसन्द नहीं करते उस में उस पर तुम्हारी इताअत ज़्यादा लाज़िम है

बस उसमें गुनाह न हो। लेकिन उसका भी तुम पर यह हक़ है कि तुम उसके साथ नर्मी व मोहब्बत से पेश आओ और वह भी इस लज़्ज़त अन्दोज़ी के लिए तुम्हारे लिए मरकज़े सुकून है कि जिससे मफ़र नहीं है अैर यह बजाए ख़ुद बहुत बड़ा हक़ है और ख़ुदा के अलावा कोई ताक़त नहीं है। (रिसाला–ए–हुक़ूक़, इमाम सज्जाद[अ0स0])

दुआ-ए-अदीला

मरने के बाद हर इन्सान से उसके अक़ीदे के बारे में सवाल हाते हैं (चाहे वह क़ब्र में दफ़न किया गया हो या जला दिया गया हो दरिया में डुबो दिया गया हो) अगर उस ने सही जवाब दिये तो नकीरैन (फ़रिश्ते) जन्नत की बशारत (ख़ुशख़बरी) देकर जाते हैं और बरज़ख के ज़माने में उस के लिए राहत और आराम की चीज़ों का उसके लिए इन्तेज़ाम कर दिया जाता है।

और अगर मरने वाला सही जवाब नहीं दे पाता तो नकीरैन (फ़रिशते) उसे जहन्नुम की खबर देकर जाते हैं और उस की सज़ा का सिलसिला शुरू हो जाता है।

और हदीस में है जो मर गया उस की क़्यामत क़ायम हो गयी यानी उस के जन्नती या जहन्नमी होने का फ़ैसला हो गया।

इसलिए हर मोमिन के लिए ज़रूरी है कि वह सही अक़ीदे के बारे में इल्म हासिल हरे मालूमात करे और उन को ज़बानी याद कर ले ताकि नकीरैन (फ़रिश्तों के सामने डरने के बाद भी जवाब देने में ग़लती न हो और क़्यामत में

अक़ीदों की बुनियाद पर आमाल (वह काम जो इन्सान दुनिया में करता है) को जाँचा परखा जायेगा।

इसलिए इन्सान के सही अक़ीदों में किसी तरह का खोंट नही होना चाहिए इसी वजह से हर इन्सान कि लिए ज़रूरी कर दिया गया है कि वह उसूल—ए—दीन का इल्म (मालूमात,जानकारी) दलीलों से हासिल करे और वह सही अक़ीदे दुआ—ए—अदीला में इकटठा कर दिये गये हैं और इस दुआ के बारे में शेख अब्बास क़ुम्मी[रह0] अपनी किताब मफ़ातीहुल जिनान में फ़रमाते हैं:

शैतान मोहतज़र (वह शख्स जिस के जिस्म से मरते वक़्त जान निकल रही हो) के पास आता है और शक पैदा करता है और मुहतज़र को शक में डालने की कोशिश करता है ताकि आखिरी वक़्त उस के ईमान को खत्म कर दे, ख़राब कर दे इसी लिए दुआओं में शैतान के बहकाने से पनाह मॉगी गयी है और जनाब फ़ख़रूल मोहक़्क़ेक़ीन ने फ़रमाया है कि जो शख्स हालते एहतेज़ार (मरते वक़्त) की हालत में इस से बचना चाहता है उसे चाहिए कि वह ईमान और पॉचों उसूल (तौहीद, अदल, नबूवत, इमामत, क़्यामत) की पक्की दलील अपने पास रखे और नेक और सच्चे दिल से अपने अक़ीदों को अल्लाह के हवाले कर दे ताकि मरते वक़्त अल्लाह इन अक़ीदों को वापस लौटा दे और इसका तरीक़ा यह है कि अक़ीदों को क़ुबूल करने के बाद यह कहे:

मैंने अपने यक़ीन को और अपने दीन के इस्तेहकाम (मज़बूती) को तेरी अमानत (किसी के पास अपना सामान रखना) में दिया और तू बेहतरीन अमानतदार है और तुझी ने

हुक्म दिया है अमानतों के महफ़ूज़ (संभाल) कर रखने का बस तू उसको मेरी मौत के वक़्त वापस देदे अपनी रहमत से ऐ बेतरीन रहमत करने वाले, ऐ खुदा मैं मौत के वक़्त हक़ से बातिल की तरफ़ पलटने से तेरी पनाह चाहता हूँ।

दूआ–ए–अदीला को दुआओं की किताबों जैसे मफ़तीहुल जिनान, तोहफ़तुल अवाम और दूसरी किताबों से पढ़ा जा सकता है।

मुनाजात
बारगाहे क़ाज़ीउल हाजात

अज़ः अल्हाज मौलाना सै0 मोहम्मद बाक़िर बाक़री जौरासी आलल्लाहो मक़ामहूः

रब्बे हमीदो मजीद मेरे जमीलो जलील
ख़ालिक़ो राज़िक़ मेरे मेरे वकीलो कफ़ील
मेरे खुदा–ए–क़दीर मेरे मुजीरो नसीर
मेरे लतीफ़ो ख़बीर मेरे समीओ बसीर
मेरे अलीओ अज़ीम मेरे अलीमो हलीम
मेरे क़दीमो हकीम मेरे करीमो रहीम
हाज़रे दरबार है अब्दे ज़लीलो हक़ीर
बाबे नबी का गदा बाबे अली का फ़क़ीर
फ़र्क़ गुलामी पे है बारे ख़ताओ क़ुसूर
क्यों न झुके सर मेरा शर्म से तेरे हुज़ूर
जानिबे जुर्मो ख़ता यूं जो तबीयत बढ़ी
देख के तेरी अता मेरे जसारत बढ़ी

फिरता रहा दर–बदर ये कभी जाना नहीं
जुज़ तेरी दरगाह के कोई ठिकाना नहीं
बन्दा–ए–असी हूं मैं की न इताअत तेरी
तेरे ग़ज़ब से मगर आगे है रहमत तेरी
हुस्ने अमल के एवज़ ले के चला हूं गुनाह
साथ है तेरा करम बस यही है ज़ादे राह
कुव्वते ईमां नहीं ज़ोरे अमल भी नहीं
अहदे ज़ईफ़ी में हूं दूर अजल भी नहीं
गर न हो तेरी मदद कौन संभाले मुझे
क़ारे मकाफ़ात से कौन निकाले मुझे
नक़्स हर एक काम में फ़र्ज़ में नाकाम हूं
साथ तेरे फ़ज़्ल के तालिबे अन्जाम हूं
धूप सहूं हश्र की यह मेरी ताक़त कहां
दे वह जगह हो तेरा साया–ए–रहमत जहां
छोड़ के यह आस्तां और किधर जाऊंगा
लेता हुआ तेरा नाम अब यहीं मर जाऊंगा
क्यों न हो दस्ते करम फ़र्क़े मुनाजात पर
जब है भरोसा मेरा सिर्फ़ तेरी ज़ात पर
वादा–ए–कुरआं जो है ज़ामिने मक़बूलियत
दोनों जहां में अता कर दे मुझे आफ़ियत
नाक़िसो अबतर दुआ पाए कहां से असर
कामिलो मक़बूल हैं मेरे वसीले मगर
मेरे ख़ुदा वास्ता चारदह मासूम का
कर्बो बला के हर एक तशनाओ मज़लूम का
ख़ैर पर हो ख़ातमा मौत शहादत मिले
बिस्तरे ख़ाके शिफ़ा मस्कने जन्नत मिले
नज़ा हो या वहशते क़ब्र हो या हो फ़िशार

चाहिए तेरी अमां ऐ मेरे परवरदिगार
हौल के माहौल में जब हों सवालो जवाब
गोशा–ए–तुरबत में हों जलवा नुमा बूतुराब
आल का हूं एक गुलाम नाज़ मुझे है यह आज
बरज़ख़ो महशर में रख मेरे ख़ुदा इसकी लाज
ग़ैज़ो ग़ज़ब की नज़र ऐ मेरे मौला न कर
बन्दा–ए–नाचीज़ को हश्र में रूसवा न कर
है यह हक़ीक़त कि मैं अब्दे गुनहगार हूं
शाहे जिनां का मगर शाएरे दरबार हूं
अद्‌ल तेरा मांग ले क़ीमते जन्नत अगर
कुछ मेरे दामन में हैं अश्के अज़ा के गोहर
जिनकी ज़ियारत का है मुझको मयस्सर शरफ़
रोज़े क़यामत मुझे भेज उन्हीं की तरफ़
मेरे गुनह बेशुमार ठहरेंगे रोज़े हिसाब
ला न सकेगें मगर कसरते रहमत की ताब
नारे जहन्नम न दे मालिके हर दो जहाँ
दुश्मने आले नबी होंगे मुक़ैयद जहां
हक़ है मिले गर मुझे तेरा अज़ाबो एक़ाब
मक़्सदे इब्लीस यूं होगा मगर कामयाब
उस पे करे क्या असर गर्मी–ए–नारे सक़र
जब अली से ख़ुन्क जिसके हों क़ल्बो जिगर
बाक़िरे आजिज़ को है निस्बते नस्ले रसूल
बहरे नबी बख़्श दे कर ले दुआ को कुबूल

इन्तेखाबे मुनाजात हुस्ने कुबूल

मौलाना इब्ने अली साहब क़िब्ला

तवक्कुल का बादशाह है सुनले मेरी दुआ
पूरा करे करीम मेरे दिल का मुद्दुआ
आदिल है तू न अद्ल से ले काम मेरे साथ
कर अपना लुत्फ़ व फ़ज़्लो करम आम मेरे साथ
ज़िन्दाने दर्दो रंजो बला में असीर हूं
ऐ रब्बे दो जहां तेरे दर का फ़क़ीर हूं
आमाल मेरे कब हैं गवारा मेरे लिए
ऐ तेरे फ़ज़्ल का है सहारा मेरे लिए
एक रब्बे पाक सदक़ा हसन[अ0स0] और हुसैन[अ0स0] का
कर अफ़्व हर गुनाह मेरे वालिदैन का
दुनिया के रंजो फ़िक्रो मरज़ से निजात दे
अज़ बहरे पंजतन उन्हीं तूले हयात दे
सदक़े में मोमिनीन के मेरे ग़म को दूर कर
रंजो बला के हमला–ए–पैहम को दूर कर
सदमात हैं वह दिल पे कि जाँ लब पे आई है
नरग़ा मुसीबतों का है मालिक दुहाई है
दिल को ज़रा सी देर भी राहत नहीं नसीब
एक पल के वास्ते भी मसर्रत नहीं नसीब
जाता हूं जिस तरफ़ है मुसीबत भी साथ साथ

यह ग़म हैं और आलमे गुरबत भी साथ साथ
दीवारे नारसाई व आफ़त बलन्द है
हर सिम्त राहे चारा व तदबीर बन्द है
क़ल्बो दिमाग़ रहता है सख़्त इन्तिशार में
कोई भी चीज़ अपने नहीं एख़्तियार में
हैरत की बात यह है कि यह बेकसी है क्यों
आख़िर यह मुझ पे आलमे बेचारगी है क्यों
मुजबूर हो वह दफ़ा मुसीबत के वास्ते
हो बारह शेर जिसकी हिमायत के वास्ते
मुशकिल पड़ी है फ़ातहे ख़ैबर को भेज दे
मेरी मदद के वास्ते हैदर को भेज दे
सामां शिताब कर दे मेरे दिल के चैन का
परवरदिगार वास्ता ख़ूने हुसैन का
परवरदिगार गर्दने असग़र का वास्ता
परवरदिगार सीना–ए–अकबर का वास्ता
परवरदिगार क़सिमे मुज़तर का वास्ता
परवरदिगार हुर्रे दिलावर का वास्ता
नूरे दो चश्म हैदरो अहमद का वास्ता
परवरदिगार औनो मोहम्मद का वास्ता
सिब्ते नबी के छोटे से लशकर का वास्ता
परवरदिगार तुझको बहत्तर का वास्ता
अतफ़ाले शह की खुश्क ज़बानों का वास्ता
अब्बास के कटे हुए शानों का वास्ता
अस्हाबे शह की तशना दहानी का वास्ता

अकबर की नामुराद जवानी का वास्ता
सजदे में जो मुवा उसी ग़ाज़ी का वास्ता
परवरदिगार ऐसे नमाज़ी का वास्ता
परवरदिगार ज़ैनबे कुबरा का वास्ता
परवरदिगार चादरे ज़हरा का वास्ता
ज़ंजीर में बंधी हुई बांहों का वास्ता
बीमार की घुटी हुई आहों का वास्ता
तस्कीने क़ल्ब शाहे मदीना का वास्ता
परवरदिगार तुझको सकीना का वास्ता
आबादिए दवामे शहे दीं का वास्ता
ताराजीए ख़यामे शहे दीं का वास्ता
उक़्दा कुशा है उक़्दा–ए–आफ़त को खोल दे
मेरे करीम अब दरे रहमत को खोल दे
महरूम कोई भी तेरे दर से फिरा नहीं
मेरे करीम तेरे ख़ज़ाने में क्या नहीं
हां शाख़े आरज़ू का तरो ताज़ा फूल दे
यारब मेरी दुआओं को हुस्ने कुबूल दे

अजमते मादर

मौलाना अब्बास हैदर हुसैनी जज़्ब

है जो औलाद की रहमत उसे मां कहते हैं
जिसकी ताअत है इबादत उसे मां कहते हैं
जिसके क़दमों में जन्नत है उसे मां कहते हैं
जिसकी आग़ोश में सुक़रात अरस्तू खेले
जिसकी गुलशन में कमालात के बुलबुल चहके
हक़ ने दी जिसको करामत उसे मां कहते हैं
जिसकी आग़ोश के पाले हुए हैं आलिमे दीं
जो ख़ज़ाने में बने इल्म के एक दुर्रे समीं
जो कि है हक़ की अमानत उसे मां कहते हैं
अम्बिया ने भी इसी गोद में पाई है अमां
मोतरिफ़ आज भी है उसकी क़यादत का जहां
जो है तस्वीरे मोहब्बत उसे मां कहते हैं
कहीं मरयम कहीं हव्वा कहीं सारा बन कर
दर्से अख़लाक़ का है एक मनारा बन कर
जो है दरिया–ए–शराफ़त उसे मां कहते हैं
दर्से अख़लाक़ में रिशवत की तलबगार नहीं
बदला एहसान का ले उसका यह किरदार नहीं
बे रिया जिसकी है ख़िदमत उसे मां कहते हैं
देव अफ़लास के हर शर से बचाती है यही

भूखी रहती हुई बच्चों को खिलाती है यही
हक़ ने दी जिसको यह ताक़त उसे मां कहते हैं
थपकियां देके शजाअत के हुनर सिखलाती
शबके आग़ाज़ से जो ता–बसहर बहलाती
फ़र्ज़ है जिसकी इताअत उसे मां कहते हैं
अपने बच्चों के लिए पहली यह उस्ताद बनी
फ़िक्र फ़रदा के लिए अज़्म की बुनियाद बनी
जो है औलाद की राहत उसे मां कहते हैं
दर्से इबरत है अगर क़द्र न इन्सान करे
भूल जाए उसे जो उस पे सद एहसान करे
फिर भी जो बख़्शे मोहब्बत उसे मां कहते हैं
फ़ाक़ा ख़ुद करती है बच्चों को खिला देती है
कुछ नहीं रहता तो बहला के सुला देती है
जो है ईसार की मूरत उसे मां कहते हैं
लोरियां देती है वहदत का सुना कर नग़मा
और पढ़ाती है सवेरे को ख़ुदा का कलमा
जो करे इतनी रियाज़त उसे मां कहते हैं
सारे इन्सां के लिए है यही पैग़ामे हयात
उसको ख़ुश रखे फ़क़त है यही इन्आमे हयात
जो है औलाद की रफ़अत उसे मां कहते हैं
लातक़ुल उफ़ की सनद हक़ से मिली जज़्ब उसे
यह है वाजिब कि हर इन्सान सबक़ यह सीखे
हक़ ने दी है जिसे अज़मत उसे मां कहते हैं

माँ

अल्हाज सैय्यद मोहम्मद रज़ा सिरसवी

मौत की आग़ोश में जब थक के सो जाती है माँ
तब कहीं जाकर रज़ा थोड़ा सुकूँ पाती हैं माँ

फ़िक्र में बच्चो की कुछ इस तरह घुल जाती हैं माँ
नौजवाँ होते हुए बूढ़ी नज़र आती हैं माँ

रूह के रिश्तों की यह गहराइयॉ तो देखिए
चोट लगती है हमारे और चिल्लाती है माँ

हड'डियों का रस पिलाकर अपने दिल के जैन को
कितनी ही रातों में खाली पेट सो जाती है माँ

जाने कितनी बर्फ़ सी रातों में ऐसा भी हुआ
बच्चा तो छाती पे है गीले में सो जाती है माँ

जब खिलौने को मचलता है कोई ग़ुर्बत का फूल
आँसूओं के साज़ पर बच्चों को बहलाती है माँ

फ़िक्र के शमशान में आखिर चिताओं की तरह
जैसे सूखी लकड़ियॉ इस तरह जल जाती है माँ

आपने आँचल से गुलाबी ऑसुओं को पोंछ कर
देर तक गुरबत पे अपनी अश्क बरसाती है माँ

सामने बच्चों के खुश रहती है हर एक हाल में
रात में छुप छुप के लेकिन अश्क बरसाती है माँ

कब ज़रूरत हो मेरी बच्चे को इतना सोच कर
जागती रहती हैं ऑखें और सो जाती है माँ

पहले बच्चों को खिलाती है सुकूनो चैन से
बाद में जो कुछ बचा वह शौक़ से खाती है माँ

मॉगती ही कुछ नहीं अपने लिए अल्लाह से
अपने बच्चों के लिए दामन को फै़लाती है माँ

देके एक बीमार बच्चे को दुआएं और दवा
पॉयती ही रख सिर क़दमों पे सो सो जाती हैं माँ

गर जवॉ बेटी हो घर में और कोई रिश्ता न हो
एक नये एहसास की सूली पे चढ़ जाती हैं माँ

हर इबादत हर मोहब्बत में निहॉ है एक ग़रज़
बे ग़रज़ बे लौस हर ख़िदमत को कर जाती है माँ

ज़िन्दगी भर बीनती है खार राहे ज़ीसत से
जाते जाते नेअ्मते फ़िरदौस दे जाती है माँ

बाज़ुओं में खिंच के आजायेगी जैसे कायनात
ऐसे बच्चे के लिए बाहों को फ़ैलाती है माँ

ज़िन्दगानी के सफ़र में गरदिशों की धूप में
जब कोई साया नहीं मिलता तो याद आती है माँ

प्यार कहते हैं किसे और मामता क्या चीज़ हैं
कोई इन बच्चों से पूछे जिनकी मर जाती है माँ

सफ़ह–ए–हसती पे लिखती है उसूले ज़िन्दगी
इस लिए एक मकतबे इसलाम कहलाती है माँ

इस ने दुनिया को दिये मासूम रहबर इस लिए
अज़मतों में सानी–ए–कुरआन कहलाती है माँ

घर से जब परदेस जाता है कोई नूर–ए–नज़र
हाथ में कुरआर लेकर दर पे आजाती है माँ

दे के बच्चे को ज़मानत में रिज़ाये पाक की
पीछे पीछे सर झुकाये दूर तक जाती है माँ

कॉपती आवाज़ से कहती है बेटा अलवेदा
सामने जब तक रहे हाथों को लहराती है माँ

जब परेशानी में घिर जाते हैं हम परदेस में
ऑसुओं को पोंछने ख्वाबों में आजाती है माँ

ऐसा लगता है कि जैसे आगये फ़िरदौस में
खींच कर बाहों में जब सीने से लिपटाती है माँ

देर हो जाती है घर आने में अक्सर जब हमें
रेत पर मछली हो जैसे ऐसे घबराती है माँ

मरते दम बच्चा न आपाये अगर परदेस से
अपनी दोनों पुतलियाँ चौखट पे रख जाती है माँ

बाद मरजाने के फ़िर बेटे की ख़िदमत के लिए
भेस बेटी का बदल कर घर में आजाती है माँ

हम बलाओं में कहीं घिरते हैं तो बे अख़्तियार
खैर हो बच्चे की कह कर दर पे आजाती है माँ

चाहे हम खुशियों में माँ को भूल जायें दोसतों!
जब मुसीबत सर पे आजाती है याद आती है माँ

दूर हो जाती है सारी उम्र की इस दम थकन
ब्याह कर बेटे को जब घर में बहू लाती है माँ

छीन लेती है वही अक्सर सुकून–ए–ज़िन्दगी
प्यार से दुल्हन बनाकर जिस को घर लाती है माँ

फेर लेते हैं नज़र जिस वक़्त बेटे और बहू
अजनबी अपने ही घर में हाये बन जाती है माँ

हम ने यह भी तो नहीं सोचा अलग होने के बाद
जब दिया ही कुछ नहीं हम ने तो क्या खाती है माँ

ज़ब्त तो देखो कि इतनी बेरूखी के बावजूद
बद'दुआ देती है हरगिज़ और न पछताती है माँ

अल्लाह अल्लाह भूल कर हर एक सितम को रात दिन
पोती पोते से शिकस्ता दिल को बहलाती है माँ

बेटा कितना ही बुरा हो पर पड़ोसन के हुजूर
रोक कर जज़बात को बेटे के गुन गाती है माँ

शदियॉ कर कर के बच्चे जा बसे परदेस में
दिल खतों से और तस्वीरों से बहलाती है माँ

अपने सीने पर रखे है कायनात–ए–ज़िन्दगी
यह ज़मीं इस वासते ऐ दोस्त कहलाती है माँ

साल भर में या कभी हफ़्ते में जुमेरात को
ज़िन्दगी भर का सिला एक फ़ातिहा पाती है माँ

गुमरही की गर्द जम जाये न मेरे चॉद पर
बारिशे ईमान में यूॅं रोज़ नहलाती है माँ

अपले पहलू में लिटाकर रोज़ तोते की तरह
एक, बारह, पॉच, चौदह, हमको रटवाती है माँ

उम्र भर ग़ाफ़िल न होना मातम–ए–शब्बीर से
रात दिन अपने अमल से हम को समझाती है माँ

मरतबा मॉ का हो ज़ाहिर इस लिए फ़िरदौस से
अपने बच्चों के लिए पोशाक मंगवाती है माँ

याद आता है शब–ए–आशूर का कड़यल जवाँ
जब कभी उलझी हुई ज़ुलफ़ों को सुलझाती है माँ

सब से पहले जान देना फ़ातिमा के लाल पर
रात भर औनो मोहम्म्द को यह समझाती है माँ

जब तलक यह हाथ हैं हमशीर बेपरदा न हो
एक बहादुर बा वफ़ा बेटे से फ़रमाती है माँ

नौजवॉ बेटा अगर दम तोड़ दे आग़ोश में
ज़िन्दगी भर सर को दीवारों से टकराती है माँ

फ़ातिमा के लाल पर कुरबान करने के लिए
बॉध कर सेहरा जवॉ बेटे को ले जाती है माँ

खून में डूबे हुए आते हैं जब सेहरे के फूल
ऐक एक टुकड़े को अपने दिल से लिपटाती है माँ

लशे क़ासिम पर कहा ज़िन्दा रही तो आऊँगी
अब तो सूए शाम दुल्हन को लिए जाती है माँ

अल्लाह अल्लाह इत्तेहादे सब्र–ए–लैला व हुसैन
बाप ने खैंची सिना सीने को सहलाती है माँ

यह बता सकती है हम को बस रबाबे खस्तातन
किस तरह बिन दूध के बच्चे को बहलाती है माँ

भेज कर बच्चे को तीरों में सुकून–ए–क़ल्ब से
फिर शहादत के लिए दामन को फैलाती है माँ

देके अपने लाल को इस्लाम की आग़ोश में
गोद खाली फिर सूए जन्नत पलट जाती है माँ

शिम्र के खंजर से या सूखे गले से पूछिये
मॉ इधर मुॅह से निकलता है उधर आती है माँ

ऐसा लगता है किसी मक़तल से अब भी वक़्ते अस्र
एक बुरीदा सिर से प्यासा हूॅ सदा आती है माँ

अपने ग़म को भूल कर रोते हैं जो शब्बीर को
उन के अशकों के लिए जन्नत से आजाती है माँ

लाश पर बेटे की पढ़ती है जवानी मर्सिया
शुक्र का सजदह इस आलम में बजा लाती है माँ

शुक्रिया हो ही नहीं सकता कभी इसका अदा
मरते मरते भी दुआ जीने की दे जाती है माँ

नज़्म बाप

मौलाना समर अब्बास रूमान रिज़वी

सर पे अपने ख़ुशबूओं का घर उठा लाता है बाप
गुलसिताने ज़िन्दगी का गुल नज़र आता है बाप

जब किसी तक़रीब में बच्चों को ले जाता है बाप
पहले बच्चों को खिला कर बाद में खाता है बाप

बच्चे के मरने के ग़म में ऐसा हो जाता है बाप
पागलों की तरह दुनिया को नज़र आता है बाप

पूछिऐ उन बच्चों से जब उनका मर जाता है बाप
किस क़दर दिन रात उन बच्चों को याद आता है बाप

मन्ज़िले इल्मो अदब हो या सबीले रोज़गार
अपने बच्चों के लिए रस्ता बना जाता है बाप

पावं रखना राह पर बच्चों को जब आता नहीं
बच्चों की उंगली पकड़ कर चलना सिखलाता है बाप

इस क़दर करता है मेहनत अपने बच्चों के लिए
उम्र चालिस की मगर बूढ़ा नज़र आता है बाप
बीवी बच्चे करते हैं रूख़सत उन्हें रोते हुए
जब कमाने के लिए परदेस को जाता है बाप

लफ़्ज़ रब से बाप को हक़ ने नवाज़ा दोस्तो
रहमते ख़ालिक़ से देखो क्या शरफ़ पाता है बाप

बच्चे यूं होते हैं ख़ुश जैसे ख़ज़ाना मिल गया
जब खिलौने साथ में परदेस से लाता है बाप

पूरा जब होता नहीं अरमान बच्चों का अगर
फूल मुरझा जाए जैसे ऐसे मुरझाता है बाप

मालो ज़र मिलने पे भी इतनी ख़ुशी मिलती नहीं
जब जवां होता है बेटा ख़ुश नज़र आता है बाप

इम्तिहां में पास हो कर आते हैं बच्चे जो घर
फूल जैसे हो खिला इस तरह खुल जाता है बाप

ताकि यह बच्चे करें हासिल बहुत ऊँचा मक़ाम
बात हर अच्छी बुरी बातों को बतलाता है बाप

भेजता है बच्चों को परदेस में पढ़ने को जब
अपने सीने से लगा कर ख़ूब समझाता है बाप

रोते रोते बाप की ख़ातिर दुआयें करता है
बच्चों को परदेस में जिस वक़्त याद आता है बाप

ताकि बच्चे भी हुसैनी और अली वाले बनें
मजलिसो महफ़िल में अपने साथ ले जाता है बाप

बच्चीयां पढ़कर बड़ी हो जाती हैं तो फ़िक्र में
उनके रिश्ते के लिए ठोकर बहुत खाता है बाप

जब कोई लड़का पसन्द आता है लड़की के लिए
शुक्रे ख़ालिक़ के लिए सजदे में झुक जाता है बाप

बच्चे. जब प्ढ़ लिख के अच्छे काम में लग जाते हैं
तब कहीं ऐ दोस्तो थोड़ा सूकूं पाता है बाप

जब नज़र के सामने मर जाता है नूरे नज़र
जीते जी ऐ दोस्तो उस वक़्त मर जाता है बाप

छोड़ कर बच्चों को जब दुनिया से उठ जाती है माँ
उस घड़ी बच्चों की ख़ातिर माँ भी बन जाता है बाप

हाँ मुसलसल आँखों से आंसू निकलने लगते हैं
जब कभी बच्चों की आँखों में समा जाता है बाप

हाथ में तस्वीर लेकर बाप की रोता है वह
जब किसी बच्चे का दुनिया से चला जाता है बाप

क्या गुज़रती है सकीना पे ज़रा पूछे कोई
सजदाए ख़ालिक़ में जब सर अपना कटवाता है बाप

बच्चे जाकर दफ़्न कर देते हैं मिट्टी में उन्हें
बोलिए खुद आप ही आख़िर में क्या पाता है बाप

छाओं जब मिलती नहीं है ज़िन्दगी की धूप में
पूछिए बच्चों से उनको कितना याद आता है बाप

हक़ अदा कर ही नहीं सकते हैं यह मां बाप का
मरते मरते भी बहुत बच्चों को दे जाता है बाप

शुक्रिया मां बाप का रूमान कैसे हो अदा
तरबियत मां करती है तालीम दिलवाता है बाप